

श्री १०८ सिद्धांत

अमृतकर्षिका

अमृतकर्षिकी द्योतिका

17. देवदूत की किताब (हरमंडी में लिखी) २५ पंक्तियां

७५ 366

धिका

की धौत निबन्ध :-

धर्मरत्न नामकान्तर्गुह्य श्री महाविहार

DH 366

ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
मि ॥ कहिहि श्रीमन्नामसंगीतोपनिषाद्यमार्गनत्ववतालंया
एदिहृत्ता नचयति ॥ सर्वान्यमवन्प्रधानत्वधमवनाधि
नदिनंयाप्रमरअथपुविहंनिमिरुमपायायस्मात्सुदधा
नश्यनार्थकनका नूतिकायमहरकनमार्गप्रवृत्तातिन
यनुदिहंत्वनवाधिविरुमिष्टादिह्यमरुमववस्माज्जपु
यासा ॥ अथकप्रवृत्तानीनिमिरुनिधुमादिनिवन्नामानाति
त्यकिआपनकिनिधु ॥ नविष्टादि ॥ नविममिरुप्रसापक
॥ नावीतिमनाप्रकमूनाप्रकाष्टानिगदधायमर्थ ॥ पक्

कुलवाह ॥ आत्मनां व्याप्य बलाप्य नरुयाकियासत्ताधकुलंयस्यामृतायाजगिरिवाना
काहृनाथकानिलं ॥ एतकिंनपंरुनोहिददीप्यमाना ॥ उनरुनामहरुनाहननातिवह
प्रक्षयाष्टदनमनेनताहसानामधुगहायाहंरुमानामधिरामासकवाह ॥ गइकंध्यामीक
वस्तुमयीरुवकुमिलायसंकिरुविश्रमायालेलमानुदमध्यासिरुकुदेवासेभवनस्य
निजापदंनिर्वाधेकुकुलं ॥ एतनास्यमार्गमनेनार्थकानित्वंदिवाहमदिविमिष्टल्येभिदिमालिन
एवेनंरुहानमवधायनिर्विचिकित्सोस्त्वहितायहिनेनलवहिनेहंविहयंमिष्टवकुधप्रतिपादिह
संगीतिविवाहीकुकामानुवदपनमादिवृडावहत्वाहिलायपमावाय्य ॥ ४५ ॥ जेयलोकसाधनंरु
रुमिष्टाहविवयस्यादिविषया ॥ ४५ ॥ नृपादय ॥ विवयनसुप ॥ नृपादय ॥ नमध्यायाप्रमर
रुविहनिष्टादिमननपयाहनध्यानां ॥ ४५ ॥ यइरुंपायाहानाद ॥ ४५ ॥ विवयविषयिना

नविषियेनत्वा॥ नदमृककमिकायां विरुक्तिवञ्जनिवञ्ज
गीश्वनेधीभवनेचनर्नमस्कुर्वीत्ययन्तागर्थनविपुविषय
पत्रमासीतिस्वभ॥ कथंरुतंविषयविषयिनूपादिवइत्त
भवन्त्वामिनाहिजसुत्तमाध्यामाध्यापायादमित्तमा
लेनंनमस्कुर्वीमिति॥ उक्तंकाव्यंभविजानीनमस्कुर्वीमि
कसिन्वातुमत्तुत्तमाध्यामाध्यापायादमित्तमा
मृदुपुत्रविषयविषयीत्यामाध्यापायादमित्तमा
नूनाकुमावत्तुपदवीमावृत्त्यापस्वत्तनदीप्यापद्युय॥ न
प्रकाशनीयस्यहत्तुगतिंसेतानवक्रमस्तेनगतेदेवय

प्राप्तिरिवागदिकनभुक्तुमृचकाधसत्त्वांकितुसंस्तनिध॥ नस्यभवनाधियस्यदुला
स्तनकातिवृत्तिगति॥ पुगनर्नयस्यारुत्त॥ मृकंकाव्यंभविजानीनमस्कुर्वीमि
उक्तंकाव्यंभविजानीनमस्कुर्वीमि॥ पुनकिंठर्भमधीत्यादिमधीनस्मिदित्त
कासेभवन्त्यलाकनाधनविनयनात्॥ नदमृककमिकायां विरुक्तिवञ्जनिवञ्ज
त्येभिदिमालिखंत्तान्निधमाध्यापायादमित्तमा
गुप्यतिपादितं॥ ८०॥ नदमृककमिकायां विरुक्तिवञ्जनिवञ्ज
गलेकसाधनेत्तुहंसायायंपुत्रवनाह॥ विषयत्तादि॥ नदमृककमिकायां विरुक्तिवञ्जनिवञ्ज
नध्यापायादमित्तमाध्यापायादमित्तमा
वयविषयिनामपुविहृ॥ गनीनपुत्रवनाह॥ विषयत्तादि॥ नदमृककमिकायां विरुक्तिवञ्जनिवञ्ज

दृष्टिचिह्नक ४ कुर्यात्पुत्रायामनिन कर्ममिहिवचनासूनवाह ॥ नवीष्टदिनविनसनाम
वृष्टाडमिहिप्रातायाम ४ कथित ॥ इदं पाठायामादिनामस्तलनमपिरुवस्तधमप्राधवम
स्तल्लाटावीषयश्चकुगतागतस्वनवलकिपंचलनकर्मकमिहिन ॥ १ ॥ इदं
धमवकविहमिहि ॥ धनधनननमवस्यकभुलीहलीगीउपदम ॥ इदहस्तुनदिष्टादित
वधवृहियस्माकमिहिनस्तुतिनका ॥ इदं कथं ॥ लोकाकनंयहवतिवस्तुनीवाचने
धियस्याह ॥ यदं कानजालयधपसमीलमूलिडलदहदिहंउपमभवनीमलीलाकाउ
मकं ॥ यदं यस्यायात्मकनाऊनमस्तववभाह ॥ स्तनविहिनमाधिनित्तमाधुमक
स्तमना ४ ककालदधुस्तनमिमयसिलमानहंकेकालनधमस्तुविन ॥ अलिहंमहास
मिहि ॥ मरुजवगुं संवृं आवकायरावलक ॥ मरुजवदवनिनापदं निविष्ट ॥ यदं

कनीचनद्वीजास ॥ वनगीनि ४ मनुष्याचिह्न ४ ॥ इत्यभिजनें धृजकुदवमहागुत्वाधनमइंम
नननपश्चमधुलात्मक ४ प्रानपवनसिंहन ॥ इतिष्ठिकनिवनस्यइनकनालंघना ॥ मिहि
दिपचमाऊनलनसिद्धिसुइनिधिमयकासृहस्यस्येकभाकनिकारोवावनमिहियहस्त
कनमनिचनधमदधिगतंस्तनकहृदिष्यहलिग्यर ४ समासाहसंऊयाह ॥ स्वस्तुयमात्म
हीनइनवगाहमार्गस्यास्यगुहीतायोयइना ॥ मध्येचमकंय ४ कंममतावदननयातिवृद्धि
इयमिहिकुडिप्यह ४ ह्यहपनमाऊनस्यसहस्यस्यपायस्यनातावाहृहृदहिनानोनाप्रोसंस्त
॥ २ ॥ प्रमादयतिचतसिर्विपूर्ववर्हिना ॥ पूर्वायनार्थसमहर्गिनादीपिकाकलुहिन्याय
धयनिधिलवकयानार्थसंग्रहस्तुहस्तुमस्यासयानदमनानाया ॥ ४ स्तनपर्वदधवमहमकादि
मरुहसिद्ध ४ धीधनाग्याकटकपुस्तनिहना ४ निहिका ॥ धीपर्वकस्यदादभयाननानामर्थाकु

2

पुष्पाधनमङ्गलमहास्त्रीली॥ भवनेधवजधनक्षयकृष्णवासश्वासचनलेधितानाष्टादशपञ्च
नंघनाभक्ति॥ नमामिहत्स्वनसदकतानक्षकथंरुवमिष्टाभेसक्ति॥ १ ॥ अमृतप्राः
चनक्ति यत्स्ननयालङ्कलितलकरभेजगयालरूपतिगुनाष्टपष्टिगचकुचूडामक्षधर्मा
स्मृतयन्त्रालस्मनक्षाय॥ ममसंन्दमधसधकनैरुहगुभक्तिमिष्टार्थत्यर्पनिहनिमथवायनमग
ननयातिवृद्धिकृभलंहावपिदुपसादवेगधमत्समधकुनवपधदपनाधनमतापिसार्थक
नानाप्रोसेस्नोसंनयनमर्थकधनेयद्रस्यानामसक्तितोस्वगुल्हृदयसम्बधकधनमहत्तु
मकल्हिन्यायाहधर्मात्रसन्निधोचप्रसादयनिद्रमाहाब्देहृष्टादिष्टहवाकालंजनिज्वलनि
धवदहमकदि कधनेषुवृष्टरुत्वनरुद्रवधान्यपाधान्यपाधान्यवर्षधहचदुर्हनालं
तनानामर्थाकृषीधन्याग्याकटकमसमहापनिनिर्वाधसंस्कानिक्तायांमहवत्वाधैश्वर्यमहत्त्वमः

सुखगदजदयनिष्ठस्यसापाश्रयत्वात्॥ हानसम्पदका॥ नानाकलायां जालकालचक्रायास्तद
 गवः॥ हानसिंहसन्निहितः॥ यकनस्मिन्मयेष्टयहेतुपनय-सुखगदयं॥ वाधिसुसुसुना
 ननिघट्टमस्तुयानशुक्रार्थिन॥ मृदुलसुनाहिनं कविह्वयधिसुत्वाष्टसुनादयः॥ हृष्टुष्ट
 त्माकं चकुरुवाग्मेतमनायसाधुना॥ मृथातसंस्तुत्यायातावजपाधिविनिर्मितः॥ शुचउष्ट
 नस्तपधोसमस्तुष्टनिष्ठपनष्टपन॥ हृत्तलियुष्टाहृत्वासंवृष्टस्यगदहस्तिक॥ हृत्तल
 दगकः॥ वेष्ट्यादिनाकालविरोधः॥ हृत्कं गृष्टकृष्टमहाशेलेप्रस्तुयाननिमानयं॥ संदस
 ल॥ वाधिसुत्वादिहृष्टसुष्टमिष्टहावकथागतष्टेति॥ प्रीष्ट्यादिवागीधननायकमल्लवं
 र्यदक्षिणपनमादिकृष्टविधिनाहिविद्यदवादर्चयानंदभिर्गदप्रवृष्टानिवृष्टादमहाह
 लयनस्तदममं॥ हृष्टप्रवृष्टलस्तिककृष्ट्यादिउक्तमिष्ट्यादिगतार्थः॥ हृष्टप्रवृष्टानि

[illegible]

[illegible]

नपदं मयार्थं न न्यावष्टरुवद्यादि ॥ पर्वकं मवं गदवायं वज्रं ॥ नृसत्संकल्पयानि र
जाग्यां क्रमा मार्ग ॥ रावना विनाधि नादवपुमान लणो दूखादया विद्या मृनि नाधि ग
ता ॥ सत्सत्ताक मथ हाजन ला कश्चि न मवन च पत्युति विज ॥ कर्म मंहि जग दूक म ॥ गंध
यं मान य चिरु मव च ॥ स्वचिरु मव संवदा वाध यं चिरु मव च ॥ वहि कन पक गु कु वज्र म क
यं सने मिनि व वना ॥ प्रवमि त्यादि ॥ प्रवमि थवं जान स्व न पा व जी व रु धन ॥ सहज वि र्धु व
मर्थ ॥ क न कि सि समा ता दि य प्र व म य थु मि नि य द व न क स्य प्र व म य क म मि थु वा र्थ ॥ व
न व द ति व रु म्भु र्ग ग द्धि रु ग ॥ अ प्र मि न ॥ कमला या प्र व ॥ क सिं सम य द्धि ति वि र्मा ज
रुं प्र वि द्धि ति ॥ अ प्र मि क व ल नी र्ध वा ग्या य क ॥ या व क या सि ॥ या ग्या क त्या दि ॥ अ हं
महा व क ध न प्र व ति ॥ स्व ग र्धे ना न द प न मा न द दि हि ॥ सा र्ध हं सह ज न प त्या रु ॥ ज ग रु ध

सहजान न नृप मानं दं वं क्र र्ध न र्प मि थु क था स च प न मा न वि न मा र्द ह य ॥ मृ ता वा वि म्भ वि
य म द ॥ कृ मी द थ क मा न ज न कि ॥ स्र स म व ति न क ति सि स वा व ति दि वा व क या थि ह ग रु या
सहज क ल्प न व वि ति न ॥ सहज विल ह न गु द क य ड य मि मि स ल ना क हं स जि म इ द व्धि
व न न द ॥ य ॥ क र्कं अ भ व न प्र वि द्धि कं सा ला य र्ध स क नी ॥ द म क र्क च नि र्द द्धि वि ति
त्या दि ॥ मृ य कि र्क या ॥ स्र वां मि ति मृ हा ना डि का ॥ म क प्र व ग नि र्ज म ॥ स न ॥ सहज
ज ग रु व रु ॥ ह ल ह रु नि ना ध न क न व द रु वि ष्य ति ॥ मृ य रु वा थि चिरु वि र्धु र्ध स प्र मि
प्र र्ध र्ध ॥ प्र ण न पा थ ॥ स्र स नं स प्र ण म ति मि प्र ति न ॥ स्र ॥ प्र ण ग ति वि व र्ध म या न नं व नि र
म र्ध वां मि त्या दि प्र ण वा रु मा रु ष्य य ॥ प्र व म यि रुं म ॥ स्र स मा थि व स्र न र्प ति द म कं ॥ य
म हं वि य रु ला क ॥ म र्ध वां मा ना ध न न र्ध नि मि रु व द्धि य रु नि र्ध क त्या रु ॥ अ हं क र्ध

[illegible][illegible]

विभूतं न कुर्यादिति ॥ कथं वा किं ह्यमिति कथं विविच्य कथं ललाटक ॥ १४ ॥ दिव्यं ललाटं
नानि ललाटादीनामायसि ॥ दिव्यं नानि कथं तेन कमन वरुणमवतत ॥ स्वमन हूतमानं द
दाति हृदा ॥ वदति विम्वमिति विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ १५ ॥ विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ १५ ॥
गदत्वादि कथं यथा ॥ १६ ॥ वंशादि सधुते यथा यथा ॥ १७ ॥ दिव्यं विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ १८ ॥
वति हृदयं ॥ १९ ॥ न हृदनाद ॥ २० ॥ निनावन ॥ २१ ॥ द ह सर्व हृदय ॥ २२ ॥ न हृदय ॥ २३ ॥ द ह सर्व हृदय ॥ २४ ॥
प्राप्तनि भाधुते यथा ॥ २५ ॥ लीकलति साया ॥ २६ ॥ यामानल ॥ २७ ॥ न वाधि विरुचय ॥ २८ ॥ क हृदय ॥ २९ ॥
माहा ॥ ३० ॥ वदति विम्वमिति विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ ३१ ॥ दिव्यं विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ ३२ ॥
उति विम्वमिति विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ ३३ ॥ दिव्यं विम्वमिति विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ ३४ ॥
थमयवर्ध ॥ ३५ ॥ न हृदय ॥ ३६ ॥ न वम्या ॥ ३७ ॥ हृदय ॥ ३८ ॥ द ह सर्व हृदय ॥ ३९ ॥

ललाटा ॥ ४० ॥ गदक कथं पन कुर्यादिति ॥ ४१ ॥ दिव्यं विम्वमिति विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ ४२ ॥
कथं न धातु कथं पन कुर्यादिति ॥ ४३ ॥ दिव्यं विम्वमिति विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ ४४ ॥
नि ॥ ४५ ॥ वदति विम्वमिति विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ ४६ ॥ दिव्यं विम्वमिति विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ ४७ ॥
उति विम्वमिति विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ ४८ ॥ दिव्यं विम्वमिति विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ ४९ ॥
अन सधुते यथा ॥ ५० ॥ लीकलति साया ॥ ५१ ॥ यामानल ॥ ५२ ॥ न वाधि विरुचय ॥ ५३ ॥ क हृदय ॥ ५४ ॥
ललाटा ॥ ५५ ॥ गदक कथं पन कुर्यादिति ॥ ५६ ॥ दिव्यं विम्वमिति विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ ५७ ॥
हृदय ॥ ५८ ॥ न हृदनाद ॥ ५९ ॥ निनावन ॥ ६० ॥ द ह सर्व हृदय ॥ ६१ ॥ न हृदय ॥ ६२ ॥
हृदय ॥ ६३ ॥ द ह सर्व हृदय ॥ ६४ ॥ न हृदय ॥ ६५ ॥ द ह सर्व हृदय ॥ ६६ ॥ न हृदय ॥ ६७ ॥
गति विम्वमिति विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ ६८ ॥ दिव्यं विम्वमिति विम्वमि संकाधुते धातु कति च ॥ ६९ ॥
हृदय ॥ ७० ॥ न हृदनाद ॥ ७१ ॥ निनावन ॥ ७२ ॥ द ह सर्व हृदय ॥ ७३ ॥ न हृदय ॥ ७४ ॥

अदिस्वस्त्याचारिगहस्तनविननासहेकलालिकर्तुसहजेकनसहयाभीलंपय ॥ चतुर्दशस
मनहृत्मानंददिनूपमिति ॥ आद्यप्रयंयापकंसहजं ॥ चतुर्विधकायसहजानंदजाकाहजाने
नादिहिवाधिवि ॥ हंस्तिनिहृत्विष्वागहृत्सादिद्यर्थ ॥ विगहंनंनंनिधिलामभा
गुद्यान्याहयगिष्वादिपाक्ष्यादिपातंनंनिधलीकनर्धवकुहीनासरवांनद्यर्थ ॥ स्वयंप्रह
हनंरुयमकं ॥ मुकुविइपाहयहृत्वंसापनदानस्यवजसत्त्वप्रहयं ॥ हंस्वा ॥ कुनसहज ॥
कहस्यकलिंगमधनयानमर्द्धह ॥ सहजहनकंसयननंमकं ॥ कडकहितिहिंमुकुवानः
मुकुवाधिविहृमकीवंयामि ॥ हृत्प्रतिपदादौडकुवांदकीधयासकुलीयाहि ॥ कडमुकु
यचतुर्ध्वामपादम ॥ ओ ॥ यक्ष्म्यांनानसंन ॥ ओ ॥ यद्योक्तयनसं ॥ ओ ॥ यक्ष्म्यांनानसंन ॥ ओ ॥ यक्ष्म्यांनानसंन ॥
दस्यांवाहस ॥ ओ ॥ दस्यांस्वंधवाहस ॥ ओ ॥ दस्यांस्वंधवाहस ॥ ओ ॥ दस्यांस्वंधवाहस ॥ ओ ॥ दस्यांस्वंधवाहस ॥

अर्थिसव्यसंभस ॥ ओ ॥ मुकुसुमाह ॥ ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मनगहस्यमु
हामस्यसिद्धिदस्याह ॥ कामगान्यथायावमुक्तक ॥ आसवाहनवाचिरुया ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥
या ॥ कुनरायनीर्वहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥
याताहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥
नसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥
॥ श्री ॥ सनकायमालम्बनीहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥
समजगहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥
मकिर्माजिविमाज ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥
रुगीयातामसकीनीनिय ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥ मसंजामवहृत्साचर्यहिजामस्यनादिवाहव ॥

अवेगद्वादिस्थयं पर्वकमववज्जममल्लयत्नमि नयसगावपुहाभननभिस्सुचराना॥पम
हदगाहकनक्षीदिधनाधविस्वकनक्षाययगिगिरुमर्हताह॥वाधिविरुपूयैयनयन॥
आनस्यायावधिकत्वात्माग्न्यारुद्रुदोखादिनानयनापायसुचक्षीयैकुललादगह्वलिनि
वाप्राणांनहिमेनपयानक्षानंदकत्वाहाकिस्त्रकल्पयिगुहोग्रहवैयभसायवडग्रहस्य
त्वाह॥तापार्थमाह॥मनापिविकल्पायवादकसुरैश्च॥आदमीदिहिसमगाहवेऊनाहृत्तान
सुरैश्च॥अरुविचिरुहविस्सुनह॥अरुविनाहिसनस्रुत्तानअकिमर्हजिल्लहवभमस्रु
याह॥विरुसंविकृतंकाधनपं॥अरुसंवायामादियारगानहसिदगविडधुकिधक्षीधहृत्त
समनसत्वादीनविरुत्तयाश्चपापुत्तथानेकेनलाकारुनमहानागनयैश्च॥वनाहमन
कवललावच्छेदनाहृत्तयाश्चनयावश्चाहृत्तयनवर्चविकाडतामर्कश्च॥अहवधउर्वादीहि

नायथासर्थाविद्यावाइष्टप्रसाधिकिवचनाह॥रुयानास्यवपुकाभयहिष्मास्त्रिमिरादिनायध
हृत्त॥सहृत्तादियदहृत्तमादिनिपिरुनयाधायस्यसमश्चाहनविद्यावहनवजापाकनेवाइष्ट
नमडांच॥सत्कारावयदिव्यमूडामिहिसहृत्ता॥कदल्लमिहिनिरांष्ट्रयादयथागतानामन
मिहिरुद्राकर्मतामूक्तंसेवमहामूडा॥अनसाधिकिहिसास्त्रीनाववनाह॥अदाहृत्तमूर्धसिजल
प्रवच्छेदनच्छेदनरुद्रलकहियावच्छेदनक्षरावनायांसर्वधर्मशुन्यातांयानगांउरुस
रुलाहावादिहि॥अगयगिमनिनंतांतांगदुर्हिगदुर्हिक्त्वालोकाभिकृताक्षपुच्छंदविगमन
हसत्वातामीमंमार्गमाग्याहुंमदिहैश्च॥आदवावाताश्चापुष्टयधुन्यातांआकाशभुनप
उनास्रवकाधउक॥उरुयकविगगुडैनिहियाकंवडस्यवनिर्विकल्प॥ ॥पर्थस
पापुत्तयां॥यइकंनिस्रहावयदयस्त्रिनिस्त्रहावगत्याकृपानचकानयाधियासाईगगक्षगग

कुरुचरान॥ पञ्चार्थपायं व्याख्यासार्धं व्यावृत्तं धर्मादि॥ नूत्ननिमित्तं न विवृत्तं विवृत्तं गतं विवृत्तं
 पञ्चार्थं नयन॥ हस्तकीयासासमस्या ईनयनाहू मिथ्यार्थं कामविह्वलीदिह स्यावकारणाय
 तद्वत्तुल्यनिष्कं न हस्तानिहिलवत्॥ षड्वं वक्रमा र्थेयसाहसदि॥ नूत्नद्वयं रोगोत्त
 यवद्वयहस्तसाग॥ सहस्यारिगुणिन न नापायवाक्यसन्निहितवचनात्॥ विज्ञानरुवं धिययोस
 कनाहस्तान्नानसर्वविशुद्धधर्मधुस्तानिधर्महितयुक्तमनस्त्रयप्रकृतिश्रुत्यप्रतासमः
 तल्लवभममरवसमसनस्रुतिवचनात्॥ हस्ताधिस्रुतिमिद्रीमहास्रुत्ववलेन वमनियनाह
 कथं को धट्टाहस्तविश्रान्तकस्यामृतयथगतकारणप्रसाधपडुक्तं तिष्ठ॥ नूत्नयसंख्याम
 ॥ वनाहमनहृकनयनहिमकापुर्णलरग्नानुत्तमापावत्तुतिमलरग्नमाहवाकनय
 हवदाउर्गोत्तहिमवर्कं वृत्ति॥ कागुल्ल्यादि विधासयति ईहृष्टाभूत्यामदसधस्रु॥ इति

का

मस्यादिना न्यक्षककथमसहजं न कीमित्रीपिलस्रुत्॥ आसनास्रुत्तययहस्तानुत्तयर्थापसवयदि
 पाकनैवाधुके र्थति॥ स्रुत्तयदिहृत्तके संकुनवं विहृत्ता कर्ममज्ञात्॥ कल्पितत्वाहस्त
 आगतानामनस्यायद्यत्तिहृत्तवैवाधर्माहस्तान्येधुंता न्यहृत्तद्वं र्थतिवचनात्॥ नूत्नविज्ञा
 ननूत्नस्रुत्तलविज्ञाधविमाहृत्त॥ नूत्नग्यागकिमहामहस्याहृत्त॥ नूत्नस्रुत्तिविज्ञाधमिहृत्तिसि
 योनगं उहसमापडोस्रुत्तिं महास्रुत्तं साधयति॥ यथाहृत्तिमृगहृत्तस्रुत्तवर्तिमृगुत्तिनहृत्ति
 कं र्दविगमनविहृत्ताईनयनाहृत्त॥ हृत्तयदि कायादिनामिहृत्तवैवाधर्माहृत्तनामैकं मथमावा
 कागमहृत्तयथाहृत्त॥ हृत्तहस्तानुत्तमाहृत्त॥ यदिवाविनमहृत्तयथाहृत्तयथाहृत्तयथाहृत्तयथाहृत्त
 ॥ यथसाधनयथाहृत्त॥ नाथनयथाहृत्तमहृत्तहिनिहृत्तनाथेयगिउसर्व॥ उकीहृत्तहृत्त
 ईगगहृत्तगगनयथहिपुनरुहृत्तमहास्रुत्तं र्दहृत्तकनविहृत्ताहृत्तयथाहृत्तयथाहृत्तयथाहृत्त

[illegible]

निरुस-सोम्यं परं न च ललितं हस्तलिङ्गं सर्वकालमिति सिद्धिं लङ्कनमकं ॥ मृका नागु यं
यद्यगनर्द्ध ४ यथापि संप्रधानं ४ मृत्प्रापक मग्नां सदा सत्ता आधुन्या वाहनं
यदि ४ रवमिच्छा दिव्यकं यदकं ॥ पापं नागं विना भक्तं प्रियं मादृशाय मादृशाय मादृशाय
नपा नादिकं चिरं कुंठयिष्ये न हस्तं खं वक्तुं मत्तं ज्ञापयिष्यामि ॥ प्रकृतिं विवेकं विवेकं विवेकं
वक्तुं विवेकं ॥ सर्वं ज्ञादिना शक्यं गतं ४ इह माकारं धर्मादयं चिरं वक्तुं प्रवक्तुं विवेकं
हस्तं विवेकं ॥ सगुणं लोहितं लङ्कनं लङ्कनं लङ्कनं लङ्कनं ॥ मृत्प्रापक मग्नां सदा सत्ता
स्यति ॥ कायादि कल्पे दमादपि कं रुनपि लङ्कनं नयं वदनं न हस्तं दायमा ॥ मनीषि स हस्तं
महति समीयनं सा कालिक यनं लङ्कनं समयं वक्तुं न जनीयादीनां च हस्तं ॥ विवेकं विवेकं
परं सगुणं ४ लङ्कनं ४ सगुणं कालिकं विवेकं विवेकं विवेकं ॥ मनीषि स हस्तं

हृत्कलस्त्रास्त्रनदमनकनादभक्तकालनायामिष्टादिप्रत्यहनिमहामाकाकाभीमुन्य
स्याविम्वक्त्रावनमिष्टकृष्टवदुलीकृतिप्रकाशकसंदर्भसंज्ञानहृतिगीपनमानद
नयकायाविंशनांसहृष्टयवभक्तप्रकायादननराधकं॥कुलाकमास्त्राकादिउयंरत्रिना
नरु॥असनानस्वनमिष्टनेनवज्ज्यादि॥वज्ज्यामवविकल्पकपाद॥नदखननेनोनाकाय
कायादिहिललनादिनाठीउयं॥स्वयंननीतिस्वयनराइनाहृतिगीनाकनधरुगयासह
वर्धनपुष्टवाष्टयवर्धयदिदि॥पुष्टस्त्रनहृताकृतिविष्टलेषाप्रकृतीदिनारामीकनक्ष्माहृता
नमार्गहया॥ननारगयापहृत्केपनाभयदाह॥हृत्वादर्भनाहयानांक्ष्मासनांसर्वसंजय
पनपादष्टांतास्त्रासहृत्कृतिप्रसक्तप्रसक्तनेनस्त्रादयिनिजावर्धधुर्थ॥असमका
माहा॥अवकात्यादि॥कुलेरगाकुंधाकुठसर्वस्यादिवाधिदैतकृत्किंरुंउकृदावकाक्षांयाफि

गमरक्षसमाभूति॥वज्जकमलया॥कलिककृष्टराचवायस्याकाक्षस्यमन्त्रीसूरवेदीपनंसह
कुलस्यादिस्रक्षयागनचक्रंभानयतिधर्मादयस्कनरान॥कायवाधिसादिनारुचयक
नचष्टाकायवाधिरुचक्रंक्रमाहृतिगतिभनिनजनननांवीरुविनृ॥लाकस्यादिलोक
पदादनाप्रवमर्थ॥निस्य॥एनदंभुजंयज्जकनिरुगविष्टस्यानाखाशवेनोचनादिप्रागवनि
गकाकाभाननकृयाभिनसिसकुलिंगर्ध्वजंविहस्रवष्ट्रसुर्थ॥उकृत्कवजगर्ह॥
सकृवक्रुत्सि॥अभायसिद्धिवाया॥वज्जसत्वास्त्रनचक्रंनायकं॥संरुतिपनमाथे
यांजालसेवकंलाकस्याहसंवाधिननपलधिनिक्तिस्त्रुक्तचिरुंयधिरुमचिरुंप्रकृ
पनममहासहृष्टउपनक्ष्माभ्यानष्ट॥॥माहगाथस्यादि॥अवज्जनीहृत्स्वय
वीनजाहृतिरुगवतिप्रसक्तयालिङ्गिताउत्यादयवर्जिता॥उनसूत्रवाहास्यादिसेधामि

कुरु॥ वडा नां न ककु काय सहितु के ल्य समद क॥ सर्व रूप न मदि वृ ह ग वान् न द ह स वा व
वि के ॥ काय सु इ के सर्वा का ना वि गु वि य ध र्मा ॥ प्रा फा नि ना थ वा ॥ ह्या रा वि का म न ॥ काय सु व
मु न्य ना ने ना ल्य मि श्र थ ॥ मृ ह ॥ वि ग म थ या ॥ ह ल र ह ल्य ति ह ल्व ह ल्य स्या भ नं ना न्य दि
क म्म दि न् प म्मि त थ कु द व ॥ य ना ल ना प म्मि ति गु ड दृ ष्टि सु ह ल्व मि हा ष्य व ही ति ॥ के मि नि न
ह वि स ॥ वि प र्य सु ल्व न य थ ॥ इ ना द्य ला कि ह न प मा स त्रे दृ ष्ट स्तु ॥ मी नि वि र्थ दि वा नि
था ल्म स द म्म ना ल्म ना ना पि ह ॥ र्थ ह ॥ वि हा व ग हा र ति मि स र्व हा जु म ॥ ह न थ स सा न ह रु ल्व
ह वि ष द ह न ॥ ह ह ॥ भ ष ॥ क म्म सु उ द यि ॥ क र्म वि स ना दि स नी स सा न ॥ स न ध न हि
न पि न य ल्म ॥ प्र ह व र्गी ति ॥ म दु न या ल्म क ॥ वि ॥ यान या न न ल्पा दं प ल्व वि ॥ भ वा ह ॥ ह थ
मृ हा या का म्म म क वि के नि श्वा दि ॥ ह दु न न ल्पा द ॥ ह ल्व ॥ म्म पा द ॥ म्म ह रु क्ता ॥ ह र्मी रु ल्व न हि का ड ग म्म

ना ल्म ह वा म ध्व क धी ॥ र्प ति प ल्म र्ज ॥ वा धि क्क या न ल्पा द या ल्व नं स ल्म नां ॥ गं नि मि हं सृ म्म ह ॥ वि म्म
ह न कि ॥ ग वां सृ हा व न पि ति वि ता ॥ य द ह वि ष या स र्मि म व स क न ल्व न व ग न ह ल्व रु ॥ मी न य म्म
नी ल्म र्ज क नि ध्वां ड म ना ग ॥ थ प म्म ह नि ध य र्थ म्म र्गी म स दा स म्म धो ध्व ॥ ना पि हा वा ह्म दि मि थ
इ ट्ट म्म गु न्म ना म न्म ध सा ॥ इ र्गु ही ना य थ स र्थ वि ष या वा इ ॥ प्र ल्म धि क्क ति व न ना ह ॥ कि वि ल्व ल्म र्प
ह्म कं स ल्म थ वि प्र व दि ग ति य वि रु य की नं न रु वि म्म थ म्म द या ल्व नं व न गु नं व न्म द म्म र्ज र्ज ॥ व न
म्म ल्व क नि ग कं पं ग ल्व कं ध वा दि नं म्म पृ ह्म ला क र्म दि व रु द ल्म ति ना ति य र्मि क म्म ॥ ह्म मो हि नि
न म न्म इ र्गु वृ ना म र्गी क ॥ सा न स ल्पा व म्म रु व रु ल्व म न ल्व वा ना ति क्क म र्मी ति म्म या द क म न क न्म स
धं य ह ॥ व ह्म न य ग य था म्म ल्व न स र्मा ॥ व ड क्क ॥ सां म ल्व ॥ ध रु र्ज व रु दि र्गु द नं कं व म्म न ति थ
न य ध्म सा ह क ॥ ह्म थ्म थ्म थ्म व र्मा गु ना मि ति ॥ क क य व व ह्म र्ज न क रु म्म न ॥ क्क सि ड्म

गवान् नरसवाह यमिति ॥ न प्रसनाप्याय हस हज न नि यं मिनि न पान मिता नीता व ह यं स्थास
 नमन ४ काय सुवां प्र कृति लज्ज धृति ॥ विभु डिंया फाय धर्मा वाधि पक्ता दय सु वां या प्र कृति ४
 यसाधनं नान्यदि हि कृत्वा ४ न लक्ष नदु ४ कादि नहि तं न इ कं विक ल्पी तं य हि मि न प्र का मं न
 हिति ॥ कर्मि नि क दृष्टं क माय कर्मि नि काय था ए धा हि न रु ल्व मि ति ॥ न न्य स्य सा स्मा ली या इ
 नि वि यं दि वा नि स्या द स नै ॥ कि न द स्या ॥ म नि वि मि का य द भी य था ना म न वार्थ न ४ सु क भा स
 ध सं सान न रु ल्वं य दा ह ॥ अ हं कान का व रु द न म म कान स इ रु य प्र स का ना गा दि स द हि न म
 न ४ स न ध न हि ता दा नै ध प न ४ ॥ अ न त्या द न प मि ति ॥ य इ क म न त्या द स ल्वं मे हि
 न ४ म वा रु ॥ क था हि प ल्पान मि ता यो म क बा का म स या ग मा य ल्प ॥ य ४ प ल्पान मि ता यो मि स्या दि ४
 लं न हि का ड ग ॥ म ल्यं क ल ४ स रु व हि न इ य न ४ न स्या ॥ यो दि ॥ स्व य म न या ग्वा स्य हि म ध्यां न

सुगुह ४ मि मार्ज श सिद्ध व क्त मान य क्ता ग मा रु न न हि या नं म ह ४ न ड व क द र्या ना रु ॥ न न य व
 ४ ॥ मी न प म ४ म क नी रु म न य ल्व न हि न श ह ४ ॥ मी ना न स ज ल प रु ॥ अ नै प व डो क
 हा वा ४ इ मि था ४ ४ ॥ स र्व हि क ठी र पा कं स र्व नि रु म पि य रु ल्प मि था ४ ४ ॥ नि य कं वि ना स य मि
 ॥ कि वि ल्प य पि य ह ४ ४ ॥ व ४ ॥ स य व ४ ४ ॥ ह रु ह ल्पान ४ ४ ॥ स मि न चि न न ना पान प या न प्र स ४
 ४ स र्व द ॥ ग न धं पा ग प्थ स्य स थ वा न ध मा ल्प न ४ स र्व स वा न ध य ॥ अ शा जी नि स्य स र्व दि मा न ॥ स सा
 ॥ ४ ॥ मी हि नि र्वा ध य न क व र्म नी क था गा म दि ल्प व वा के रु स र्व ॥ नि ना ल्प मा य स र्व वा हि ताः
 ४ क म न क म्वा स्या ॥ य धे कं ना य न कं न स र्व य था ध प यं स र्व थ वा स ॥ ४ कान क वि य कं ४ वि
 ४ म्फु नी स थ हि ॥ या व ल्प म मा न नि नं स र्व व ४ ॥ स मा न द स त्या सि ४ ४ ॥ द न सा रु क ४ मि नि
 ॥ ४ का सि डो रु य सि ड ४ ४ ॥ ० ॥ ना स त्या स्तु न रु य ल्पान वा धा म न स रु य सि

नरुपेकगच्छ ॥ यदनरुयगकनासहयथाकासं सर्वथा ॥ सहस्रगभवि काधदननरुवाहावाह ॥
रुविद्ययापहकत्वाह ॥ नाथनरुयप्रथमद्विगिययकाकत्पक ॥ सहनसचासनसचसचनचास
वृद्धियस्ययजानविशत ॥ उपामकृषिभभापितस्यकर्तुनभककवृमिहसांज्यास्यपूरथदिगचनेल
धुदुष्टकटिमकयगहसनंयदिययंरुदाकानधनियथानीलसनंनीलाकानकदुष्टकाटिवि
त्वाचिनंनयानत्यवरा नादिप्रवृत्तिर्नसाददेकभिरवनाह नप्रवृत्तिनिवृत्त ॥ एक ॥ दानादीन
प्रक्रियाहकायलकस्यवसकवाह ॥ अकारसर्वावृत्तिवनममिपितियसहसर्वाकालेवनापका
भाहनवार्यगयगादानादिपृथक्सकानसकुरु ॥ ससनसकाभानसाकुरुहावनवाधिनगध्याया
सकाभासकुरुलक्षसकासनिर्मीलकायो ॥ सनसधर्मकयसहस्रधुक्तादानादिपृथक्
दासहकाविमयिदाहजकगलुधुधुदासादिमकायधुष्टदगैसमष्टा ॥ अगधससवनकाह

दिना ॥ सदसदादिदि यस्तुलनास्ययगयथाकाभक्त्यशनचदानादय ॥ यदसकनास्ययगय
साकागादननत्यरुिमत्वाह ॥ कानधधुवीगादिनिनइत्येकुषिनिनिनइमयिमाह ॥ अनि
कन ॥ सकवृमि ॥ अहककवृत्त ॥ ६ ॥ पयकमहिप्रसंग ॥ सर्वसर्वउसाह ॥ कथादिप्रा
कदसादरावस्यानरुवानापरावादानादयगात्यननमायापमासवृत्तसस्रनपावृत्त ॥
हसंवृत्तिसस्रमिग्यसोमनि ॥ यदार्थकृत्ककसंवृत्तिमिति ॥ अनेकइकं ॥ लोकमायाकालस
यपककामावृत्तसवर्धुदिगावविगिभनागा ॥ दयसकुरुलधदहाविषयाहहनलाकभा
उपननरुवनिवृत्तिवृद्धवृत्तिसदाहनमदयसिद्धिनिहचससय ॥ कतावादिविकल्पा ॥
त्यक्तस्यामपिसतिवगवृत्ति ॥ कृत्तमिग्यादिमपृत्तिसत्रिगमयनि ॥ ॥ वृत्तिनिमि
रकानरुकाधुविमइनयासचनकमूर्तिधर्मधुदुधुनयासर्वधर्माधिपति ॥ कास

रुसना नगान नोयुहति मकप्रतिवृता ॥ यमपुहा धावपुडवर्मनिर्मला ॥ कर्मपुहावृद्धकर्म
धरुन्मृसर्वरुद्रमहापुहासना ॥ प्रसासवद्योयगिल्लनं पुपनिमकु ॥ अतिपुकासाया विषयदया
वानिन्ननेम्यानिधुपचदवगाथागनसत्त्वानामरुद्रविकल्पास्तवद्दीका ॥ रुद्रियमर्थ
ह ॥ धर्मननाल्यथागनमानयस्मि यस्तस्वयमिति मदिस्वनीति ॥ यइकं हदिगिष्टितियश्चिह्न
देनाविधिविधिसमनसंस्वचिह्नं मलुपानस्मि ॥ धुकादिमकं ॥ यइकं पल्लस्मनकश्चिह्नमव
पसव ॥ कस्यारुद्रिनिर्वाधसाया व्यरुमपिसहजं वास्तनंचनुर्ययस्यरुद्रवकं कादयंम
धधमादिहृद्रुद्रासंयद्रकस्यपुवरा ॥ उवउरुपुगाहा नादिचुह्निर्मरुमनध्या ॥ कस्यास
रुद्रयगल्लानरुवं ॥ सवगतं सिष्यप्रतिपादनाय ॥ श्रीवज्रधन ॥ सल्लिह्ननधुद्रवस्यप्रदिह
रुस्यपातोपकृतिपुहासना ॥ नगादुसाधोनिवयाति विविक्तां मागकुके नागमनादिहिरुसाव

मरुमकुनिशान कार्यस्वसंमाहर्षकपायंरुद्रनाह ॥ अतिहृन्दिनादधिकानासमकुनिनि
रुकल्यस्वकान्यकानादिनिर्वाधे वाऊनभियदावंभकलामहापुहा कान्त्वादासामवगुय
हस्वस्वत्वाधुस्वस्वना ॥ दिनूपनयतिरोत्वा ॥ उरुयस्वनामसंगुशाऊनत्वा ॥ दिवजाहिन्नं
मनधुपाक्षियानेदिदम् ॥ उंका नरुद्रिवर्त्त ॥ सभिनविहृद्रुकुकरुद्रिनाकागुधो ॥ धुयुक्त ॥ का
ऊनसोम्यसमीहृद्रुत्वा सर्वमृगयति नायंरुद्रिपकपिनगरकाहस्थानमिति ॥ अरुद्रिमितिना
गदिचक्रमधुस्वत्वाहृत्वाहृदिमल ॥ यनकार्यमित्यादिगमथाउयधसहृद्रुसंरुगनिर्मान
देता ॥ रुयधुपल्लकलय ॥ पुहासनमहायागयदाहविरुमन ॥ रुद्रियवनरुद्रिनीनाहृद्रुसय
॥ स्कंधायाकानत्वा सर्वकान ॥ सर्वरुद्रपाक्षिपादायं सर्वरुद्रिस्त्रिनामसमितिहृत्वा सर्वरुद्रियनि
वेचनपनिनावनधस्कंधादिचक्रं वरुधुमधुलक्षनमहृद्रुक ॥ कालो ॥ रुद्रनमस्वस्तनमपा

五

[illegible]

धसनिनाधकमर्थः १॥ नरुप्रयसाशकक्राशाकाहारनाशाकागलनिधिविरुपाहसाधि
जाधसुदुसा ॥ १॥ नरुगवान्बगधनासास्येयतसुसाहदुनायिकेकथंनपय १॥ सस्यमादिना
गमकुनालसनयवना १॥ सादिसमाधियादि ॥ १॥ सपायासकाकनमुग्याकुसनविका
महिना ॥ १॥ दवयानमिनामासलाह ॥ १॥ नाभाययलकुधमिहिरुहिकल्लोसग ॥ १॥ द
लाहा १॥ वजायमससाधिनोसमकपुहातिनरुमि १॥ वतिवायसिहंसेवाधिचिहंनहंप्रसादि
कुनीसुनसनयमायादहसाशुयस्ययनावुहोविहंललपनमिस १॥ १॥ कासासाधि
मुन्याधमामनीविहवथाह १॥ पुदीपहूतिनिगाशा १॥ नचसाविप १॥ धिह १॥ ननिनद्रगगनदि
मिरुतिनरुमधमहावि १॥ मधवद्विचिंदर्शनंवायविषयधुन्यमविकल्लामकसंसागकायाम
नविषयविषयिसंवधनविहसनसाधिविह १॥ सासादि ॥ १॥ नगवति १॥ हकधिहसासनि

वसनीर्जय १॥ सग १॥ वगा १॥ कीयानिवापासवापोकुठिनियमित ॥ १॥ याधमि १॥ यमनपुहाधनन ॥ १॥
माहिलाकमाकामिजाधिधिरुवापसाविधिविधादयाह १॥ पुरुहन १॥ सादिवक्रतिवाउ
साहमं ॥ १॥ यगाधमनं १॥ धिमिह १॥ लमिचयसादिककपमादि १॥ यागिवतोतिह १॥ पिनाह
दर्शनकी १॥ अंकवागिसविकल्लामाकुनिमितददर्शन १॥ १॥ यवननिनाधमाह ॥ १॥ अनिमिषसादि
साधायविहंनिनगंधिरुह १॥ यवनावध ॥ १॥ मधमायापुविह १॥ कल्लसादि ॥ १॥ विकल्लनिना
गाहसादवविकल्लकुयाइदानधियामनिर्वचनियंविधिविधमदतिनरुसाधिविकवापिल
वचिरुकागुताय १॥ गांधानंपुथम १॥ दमम १॥ लायाक्रियनमधमननाकुवाकयनस
नहनसाधनसाम १॥ धलानियस ॥ १॥ यनमाकुनसाधनत्व १॥ धमादिनांसहजच १॥ ली
मि १॥ साह ॥ १॥ पुहिकममाकुनाहनविधिविधिविधव १॥ सादिच १॥ धधकुयागसा

2

प्रहमं नमः ॥ अनात्मनः प्रवृत्तिर्योगीनामयं ॥ हकचिरुस्यत्वाद्वादेव निर्जनादुदाहरणं न
तदिव क्रियादुपि ॥ अपूर्वत्वादि ॥ अपूर्वत्वं कस्य नु मागदहमव न स्वव न च नु पुसादीदि
तदिदं दृष्टिपनाहं लयति नापि स्थितिर्निर्विकल्पमाधिरुत्वात् विन ह दु समाधि य न्ना नाद
अनिमिषत्वादि ॥ संहृत्य सर्वं कश्चि नास्ति मिदमानसा निमिष नयना गुनर्पादिष्ट दृष्टि
विकल्पनिना ॥ अद्वितीयत्वादि मीव उक्तिरुपादयुक्तयुक्तानिषाधयति ॥ कथियस्य
साधधिक्यार्थपितृपियाच्चाचिरुत्वात् न हाह ॥ प्रकृतिविद्यालाकनशक्तिर्विज्ञानपीतिस
कृष्यकयनसकथाविन्दुविनि नाणादिचक्रस्य ॥ सहजत्वादि ॥ दमकासावस्थापनमाज
सहजचक्रलीला उत सामर्थ्यात् ॥ चक्राख्याम्ना लाकनमा लाक सुनीय संव न न्त्य
उक्त्यागसाख्यव ॥ अस्यात्वादि पुण्याहना अपि हितात्वादि अनात्मनि मोक्षकमिवायविक

यवत्तलमीनसपिनकहनिकुसुपादाः ननालनपागुक्तनमार्गः ॥ अनरुवस्यहन
वंमदमुवेधनप्रव ॥ हस्मिन्नायभनिमिरूपयानीहीस्वनिमिहवे ॥ अयनिनालम्वदरुम
लिनहृतिहसिहमिमुह ॥ अग्राथंस्वयंसुवंसाकिमृकाभंकुर्दनिमिरुनिपुसुजं
निमिरुकिंमपिनननटव ॥ गगधमिलसियदिधमादिपयकिमकिहवीति ॥ अदेवयनंम
निप्राधायकिहसुवस्यमयक ॥ किनगुधप्रवंननानि ॥ अदवदभदिक्ताधुव
लावनपनकं ह्यारुदाधुमादिदभवि ॥ धामार्गः ॥ अयुकिहकिस्वयंनवयानीधनामृद
यदिहलावनसहिगंनवंकृत्वायदामधोविगतिवाकसुदावमानलधूमउतीसुंकिह्या
अनिन्वाकनादाववयागिनानिर्विकल्पप्रवमार्गः ॥ अइहं ॥ अउरुधुमादिमा ॥ अविन्वा
राधुनलनप्रथनायदाह ॥ सेयंनसंगृहितायधननकयकनिधायन ॥ अरुवाकधनि

किमादकमधनिर्विकल्पनानुवाकं ॥ अदिमधानकल्यानीनामसजीमरुमामिनिध
नाय ॥ अकुरुलरुता ॥ अददिकर्मिकाण्डयाकं ॥ अयनंक्रमधमाधिमप्रायक ॥ अउ
धनागचिलरुदधचिहं ॥ निर्विकल्पमियथाधुमादनननेमनिविधय ॥ अयादि कर्पा
सुवंमुन्यागपूकमपाय ॥ अदिहयनपस्यविधस्यविधस्यविनय ॥ अरुमिहिलयंनदन
नाहासमानननेविधभवसिहसिहसिहसिहनाहधुनिर्मायक ॥ अयंसिजाक ॥ अस्मिन्
सह्यादियइहं ॥ अरुनकाअरुध ॥ अहसहसहवेसुचिविविदिह ॥ अयाह
अहुकेकिकायवाकिहंमनाकवासिदिनिहिराव ॥ अगधमासोमनाकवरधनिकर्म
स्वानाधुपर्वकर्मसंधिक्ता ॥ अमुविस्मनंनामनपमक ॥ पनंपापजयकनायादाह
चिहिरुपाधेधनाह ॥ अरुहागमेधननागिहा ॥ अयादानरुहागनांपापयापनिध

यदेवास्ते ॥ ६० ॥ दनायापनावेवनयनासंपनिगुहा ॥ एवमभिक्रियमिदं यथागम ॥ अ
विशानिनाधसंस्क्राननिनारभायावहृतिनिनाधकनामनधनिनाधक ॥ वरसधिन
मिदुयुद्धादिषुचकुननिनिसवापसाधनसाधनमसाधनानिषठअनिपुत्ताहानादिन
शुद्धिदुष्टायापति ॥ अकार्यदसविकल्यानानिपिनिर्विकल्पसहजगायादनाह ॥ पक्षकध
वृथागगानाननागधवजस्वरावात्मकाहमिति ॥ अथागगानाविद्यापुथिद्यादिनपालाचनार
दिनिविशयधवर्कनार्थमृद्यानानानुपभंदसकल्याह ॥ एवमिहसिद्धिजनरुवामर
नकिज ॥ समनससिद्धिजननाजसिद्धिजापनेककल्याणजनानमनधविशम ॥ धन
नयाधकधमादिमार्गधनप्रतिस्तिदिनिवाद्युपनवामर्थपुनिलकनाह ॥ मद्युप
नननिननाकानीलाहवेदमानयमयतिमेवविश्वमध्यपिवर्वालयहहहहहहहिप

मिमिद्यादिनालोकवाधनाह ॥ वाचधसवायाविचयमनापुतिष्ठाभयामदिनवाहदय
संहिसंस्थातिहत्वाह ॥ हत्वाकमायेवसंहृष्टसुप्रमितिबचनासायादहस्यगुडिधुन
सुप्रमिकायसहृष्टवाञ्छिरुसनेसहृष्टसवाविकल्पसेनसर्वतावानपलकनेपत्ताह ॥ पुन
धमनिनाधदृष्टमीडुमिनचना ॥ केमवसादिहिकनसावमाकुसंननच ॥ यदहवकुप
वहसवकियधवीनकनादस्यमाहसि ॥ मकुसनिनरुनदिधुप्रमितिनायधप्रसाविन
हहहनिनधंकिरुप्यामागह ॥ महमुनापुपियसंसारयचयाप्रोपधमसाहहवीमं
वधिविरुडयाहनधवसाहहहहहसंजायहगगसात्राडिगुपिनासमीनधसुखन
कि ॥ नमर्वधुपुनविदियहहहसाहकागनपादीमंरुहाहहानिकेदहिनंकिवीहय
गापीलननसमसहृष्टकाठिन्यधर्मिनीपृथीवीमायह ॥ हहवाधिचिरुडवाकाजाद

दिनवाल्दयहृदयिप्रतिहानात्प्रतिहानप्रतिहानिहृ॥मनंनकलननकसत्त्ववाधनाहृ
त्युच्छिद्युन्यतासेवहृदयनमार्थस्युक्तत्वात्स्यस्तापनंनान्तिदिस्यक्तस्तप्यादिस्यु
नेपत्वाहृ॥युन्यताहृदयनमार्थस्युक्तत्वात्स्यस्तापनंनान्तिदिस्यक्तस्तप्यादिस्यु
॥यदाहृदयनमार्थस्युक्तत्वात्स्यस्तापनंनान्तिदिस्यक्तस्तप्यादिस्यु
॥प्रस्ताविद्वन्यतासेवहृदयनमार्थस्युक्तत्वात्स्यस्तापनंनान्तिदिस्यक्तस्तप्यादिस्यु
हमहाहृदयनमार्थस्युक्तत्वात्स्यस्तापनंनान्तिदिस्यक्तस्तप्यादिस्यु
मीनस्यस्तप्यादिस्युक्तत्वात्स्यस्तापनंनान्तिदिस्यक्तस्तप्यादिस्यु
नंष्ट्रिबीजयस्यननकस्युक्तत्वात्स्यस्तापनंनान्तिदिस्यक्तस्तप्यादिस्यु
नडवाकाजादयाकुनमदीडिययस्यननकस्युक्तत्वात्स्यस्तापनंनान्तिदिस्यक्तस्तप्यादिस्यु

अहिर्मिलिते ४ मनिनस्याहविकल्पति ॥ चिह्नं किं स्थिति वा धनिकं विरुद्धं नृपान् ॥
मसं कुरुधिविदुष्याग ॥ अदिहं यन ॥ अहं ह्येव भागिन ॥ अहं पनिसमा सुधं वाहव
॥ अहं नृप ह्येव कामाप्रव ॥ अहं ॥ अहं वाहव सादनसुका यदि ह्येव ॥
मावासाकाहं कलाकल्प ॥ अदि ॥ अहं नीनिधुंदनो हलसासंवाधिल की ॥ अहं ॥ अहं
दिहं यन ॥ अहं पुलाखनधपाक हल ॥ अहं गल ॥ अहं न नारमहपादय ॥ अहं
महामुद्रकपागधसिद्धिवाति हदकर्ममिहिवचनारूप ॥ अदि ॥ अहं नृप सुखपा ॥ अहं
माकायापप्रव ॥ अहं निधं वाधुपप्रव ॥ अहं कर्मस्थति विरुद्धपप्रव ॥ अहं निधं
हावनावदुधं मर्हं नयाव ॥ अहं कं पुलाखन ॥ अहं विरुद्धमिहिविधसु ॥ अहं नृप सुखपा ॥ अहं
पिसहं गजानधं वदुधं यसेवकद्ववकुं हदयसुखगं वदुधं ॥ अहं ॥ अहं

पुन नावृत्तागपावके नृपस्वागत ॥ अहं ह्येव भागिन ॥ अहं पनिसमा सुधं वाहव
॥ अहं नृप ह्येव कामाप्रव ॥ अहं ॥ अहं वाहव सादनसुका यदि ह्येव ॥
मावासाकाहं कलाकल्प ॥ अदि ॥ अहं नीनिधुंदनो हलसासंवाधिल की ॥ अहं ॥ अहं
दिहं यन ॥ अहं पुलाखनधपाक हल ॥ अहं गल ॥ अहं न नारमहपादय ॥ अहं
महामुद्रकपागधसिद्धिवाति हदकर्ममिहिवचनारूप ॥ अदि ॥ अहं नृप सुखपा ॥ अहं
माकायापप्रव ॥ अहं निधं वाधुपप्रव ॥ अहं कर्मस्थति विरुद्धपप्रव ॥ अहं निधं
हावनावदुधं मर्हं नयाव ॥ अहं कं पुलाखन ॥ अहं विरुद्धमिहिविधसु ॥ अहं नृप सुखपा ॥ अहं
पिसहं गजानधं वदुधं यसेवकद्ववकुं हदयसुखगं वदुधं ॥ अहं ॥ अहं

30

न नागकिंश्च न भोजनं न गन्धं सर्वं स्त्रीष्वपि सुगन्धगन्धैः किं च भोज्यादि ॥ लघुना पलं कृत्वा
आत्मैः प्रादि सत्कायादि दृष्टिप्राप्तं यथा युधिष्ठिर ॥ सत्कायदृष्टि मन्त्राय सर्वसदृष्टि मा
त्रविकल्पश्च युहि नयः प्रहकस्यापि स्यात्सपिच दुर्धनं समुवति न कार्यं ॥ कस्यापि विक
पायमं ॥ यत्त्वाधिष्ठानं रूपमरुयदह ॥ माह स्वरावतन आदि संवृतिः सत्तुं न याज्यादि यदव
रुपनमस्यास्य नमस्तु ॥ अविस्तारकत्वात् नमस्तु ॥ यद
किं पुष्टदृष्टि सत्तुं नमस्तु ॥ अविस्तारकत्वात् नमस्तु ॥ यद
गित्तनरुदत्तादि विमिश्रितं नमस्तु ॥ अविस्तारकत्वात् नमस्तु ॥ यद
ध्या ॥ केवल्यचन धनं हि तत्त्वा ॥ धर्मकात्तुं नमस्तु ॥ धर्मकायस्य निष्ठा ॥ सत्तुं नमस्तु ॥
ध्या ॥ धनं ॥ समं नमस्तु ॥ लसत्तुं नमस्तु ॥ लसत्तुं नमस्तु ॥ लसत्तुं नमस्तु ॥ लसत्तुं नमस्तु ॥

गलाद्यादिव्यं कं ॥ महामाशसिद्धयाय हृत् ॥ सखनं यस्याहस्यारवहस्याह ॥ जवंदभाषाकाश्चभंस
कावास्तद्वदं मां रजसेदुयकिरुहकपियतासुवजवंगुनोत्तुपापदराविभाऊमधिष्टावपिम
महापू-कं ६० हृत्मनिहलसनिर्वांसाधिगदुकि ॥ यामास्यवेताश्चसंपूनर्तमनिकर्मवदिगि ॥
ययं कं कधिर्मेनयनार्गमिऊयनिशुकं मस्थनार्गमानपलसुसुखसनादवादर्भाघननसूनस्क
यातिपादाकिमासुवादि कमस्य सर्वसंख्यपुत्रवेऊदात्सुकिमान् ॥ सर्वरूपाव्यादृष्टयणसून्यन
नसुगीयागगाविकल्यसूननसुर्थ ॥ मायायमखनखाधिष्टानाधीनरुभदित्वेनप्रतिहासस्यसुखा
गौदभसंरुकिरुलमाहृत्सुखादिभधुतास्ययुगुपायनपबादाकाभवहुनादिनांपुसना
सायदाहृयककिचिरपलंरुयंपुवर्कयपनिवरुंययवा ॥ पुत्रऊदिहिन (वेहादहावावीश्न
मेवदुर्ध्वरुयि ॥ जिनसनायादग्निनिगवांकायध्वय ॥ कमार्यायथाहृत्नगुखविभूमसुखात्

हृत् ॥ यदाहृत्सेविषयसंकेतोर्दिवाविदुमित्तनां ॥ गहंस्वप्रपिकंदगाद्विषमभासनाविषमिति
ऊन ॥ अधनादनामुवकायादित्वाहृत् ॥ गायरादीनां हयस्वपिदुर्गातिरुनसहृत्नविस्माधनाइपादय ॥
मकोविंरूपश्वालावजंककाल ॥ यमंसाखांयागकठिनस्यार्गाठि नुवासनास्याहृत्नयवहृव
युक्त ॥ सेवपृथिवीधाहुगस्यहृत्स्वेनमाहृधर्मत्वाहृत् ॥ कविशुधिवेनावनवाधिविहृदिउवनपंगदया
नसाहृत्वाहृत् ॥ ऊजस्यधृदधविशुद्धि ॥ द्विउययधेनाहृत्नऊमाहृत्नागसुद्धिधुडा ॥ शिमकाहृत्कका
धकिया ॥ अहृत् ॥ वायुविशुद्धा ॥ मायसिद्धि ॥ ससंसनानेहृत्नदेवतानागमासुक्तनऊधत्वाहृत् ॥ हृदव
पनार्थयुकासमासहासुधनमथवृषादिनांप ॥ कानाहिसंवाधिमाराहृत्मादग्नसूनवाधनुहसम
नसूनविम्वनिषादि ॥ शुद्धधर्मधुनिगि ॥ ययहृत्नात्मक ॥ स्ययादिविभवेनाधुगमाहृत्
वर्तुत्वेमायायमतापय ॥ मयिहृत्वाहृत् ॥ ययाहृत्नाहृत्नविहृत्वाहृत्नलहृत्तानिपयमांसदिव्यवृद्ध

[illegible][illegible]

क॥ सर्वविकल्पविरुद्धनां प्रकाशनाय च वृद्धा नानासुखनपलादनामुवत्सलनननाकव
 बाधवृद्धवृद्धविरुद्धकस्यपुत्रसहजप्रमाथयलाह॥ निर्विकल्पप्रतिवाधाय धुनिना नाना
 वृत्तस्मादिदिवकवृद्धवृद्धपुत्राभनमृद्व्यादिसेकुम्भकवृत्तिसेभारगयकामेशाचवृत्त
 मादिद्वधर्माधायानिर्यदाहृवीर्जयषांमृगयानाधिमर्कमोगायकवृद्धधर्मपुत्रयगर्ह
 यनमानदकवंप्राक्तमिष्टायत्रोक्तस्यानरुतंसहजसर्वकल्पनेपादियस्मात्कल्पेनादिनी
 त्रिविधा यदाहसति संसृष्टययधप्रप्राप्तदागुधवत्सतिगुधवत्सतिमकवाहिलासुद्वि
 हंकनानिमागपिहृत्स्थानीयवृत्ति॥ यदकंहितासयनहयथातिनात्मकाववत्सिहस
 वत्सिहस॥ तथातानात्मनिवसत्तामकहृत्पिस्त्रिधयनासयनन॥ यथाहृत्तात्मा
 उपकृत्वात्मकस्यात्मनसस्यदर्शनं विदुर्निमित्तं॥ नाप्रिनिमित्तं दीपागं न्नादिना वि

नविमुद्रारुपादिद्यानाना॥ प्रीतिरास्वहालादि वि कल्पनहि कल्पादिहृत्स्वास्विकल्पनयप्रव
 र्यनाहृत्कृत्वस्वदासास॥ सर्वव्यादिना विधिविचनेकं वृद्धविचमिहामनसिकानस
 चिकयदिह॥ स्वाभिप्रायविचरुनासासद्व्याह॥ मृदासुर्वीहमकुंभुषवराकर्मिसुकेरणमा
 कगमृद्वृद्धवृद्धिगहृद्धव्यादिवजायोर्ध्वगत्याहृत्ताना॥ सर्ववृद्धनयकुलोमार्गनरुन
 मव्यमृतिना ननाहृत्विचरनात्मवमकासाह॥ हृत्तीयवत्सलस्वलागनीकहृत्पुत्रकचव
 पावानालयनीलोकात्मनमत्तनत्वात्कलुस्त्रवनेधर्मादिहृत्तायक॥ तथा नाहृत्मृदयासा
 पदाहृत्पुत्रवृद्धाधिष्ठानादयहृत्निर्विकल्पिमकमिति॥ निनाहृत्सस्यनिर्विकल्पस्य॥ पृथि
 वचनादाकाशमवतिनाकाशविरुद्धस्यस्तिनपुतिहृत्ता॥ हृत्पुत्रपुत्रयताहृत्वनयासाका
 वनपुत्रयतायदाहृत्कालास्मानस्यवत्तनमयायकनक्षत्रक॥ हृत्ताकानेहृत्गव्यं प्रीति

च नाचनें सखे हावः सखा हावावः सखयनसखे मिहि ॥ सखविनयनार्थं वृद्ध ऊजादसखनी
 आतासहजासकनयनि ॥ आतासखे सर्ववृद्धत्वानेत्वमवच ॥ नेवन्दयदिमान्दवात्काष्टपावाध
 सुवेनानतिक्रमधीपः ॥ १० ॥ यदाहर्कमस्तु सखानेयायनवतमगवः ॥ कष्टपावावतानमस्तु
 नेमार्थधिगमदृष्टिः ॥ महानयनमाऊनपाफः ॥ कायत्तादिविन्पादाकल्पनिनाधनाता ॥ नृ
 र्त्तहापादात्रिर्मलत्वास्तु हावः ॥ लाकालं कानहृत्तादयुत्वाविधिं कानेयुक्तं नलोनीवध
 तस्मिन् संसायाः नवजाग्नाहिनात्तादित्रापियधिमं ॥ नेयायुं नावनं यस्यमधं कृदाववत् ॥ दत्तात्रा
 ॥ नानन्ददिनपयाननुयाइरुमस्यपुत्रा ॥ गच्छास्ववज्रणादि ॥ स्ववज्रणादि ॥ कुशितनकविइरुम
 ॥ रूपार्थधीयमव ॥ दृष्टानमस्तु धियमस्तु ॥ यारुयलज्जली ॥ नृही नृविना गीचमुन्यातावतमस्तु
 कलविकल्पजाले एव ॥ ध्यानगायनवदनगृहसंवाधिवीरुत्वा ॥ मुकुटस्य ॥ वज्रमधनाऊनामृदपा

लनस्वधसंविनीययीयनमध्यागुषिनसाधकादधिचिरुमाहृष्यं मानधुंगलालनादानधना
 र्त्तिकद्वयवाधिविरुत्वा ॥ धयसाहृदाह ॥ चउपदिविमुदयसाधामरुदाह ॥ नृपादनास्वयिपनउ
 ॥ २१ ॥ आदर्शसनमाहृनरुवानेयमुनाऊसास्यं समाकृत् ॥ समस्तनपुतास्वनं ॥ नानन्द
 ॥ नृनर्थाकन ॥ १० ॥ स्वहृदुविकल्पानहियामाहि ॥ मुन्यरुयालंघयकीकिहीमः ॥ धृष्टादि ॥ जगंधाम
 ॥ धादहकल्पीसंस्क्रिताहिमहानस ॥ १० ॥ दहं कामाग्निसुखं वधयदासमन ॥ १० ॥ शास्य ॥ गुनप
 ॥ रूपागर्तानिस्त्रादिवचनारुयाईगहत्वाहृन्त्रयाकनालाहृन्त्रयावमिस्त्रादिमाकाराणि ॥ १० ॥
 ॥ त्सिकनध्याह ॥ यगनईवाहिमिगाहृन्त्रयावमिस्त्रादिमाकाराणि ॥ १० ॥ त्सिकनध्याह ॥ यगनईवाहिमिगाहृन्त्रयावमिस्त्रादिमाकाराणि ॥ १० ॥
 ॥ त्सिकनध्याह ॥ यगनईवाहिमिगाहृन्त्रयावमिस्त्रादिमाकाराणि ॥ १० ॥ त्सिकनध्याह ॥ यगनईवाहिमिगाहृन्त्रयावमिस्त्रादिमाकाराणि ॥ १० ॥
 ॥ त्सिकनध्याह ॥ यगनईवाहिमिगाहृन्त्रयावमिस्त्रादिमाकाराणि ॥ १० ॥ त्सिकनध्याह ॥ यगनईवाहिमिगाहृन्त्रयावमिस्त्रादिमाकाराणि ॥ १० ॥

तच्चिरं वाधिरुं वरुमरुयमसुतिहृदगुणैश्च कंसकलमवमनाविवर्तमानात्माया रुदं गुं
 दनं लनमयं यस्य न च धरिणि गतिमानदकिधकर्ष ननु कालमपि साधननसुखवजहृदकुलिग
 आगतासु इय धमरुपी भिद्यति सहजसुखं न वदनेन रुयन इह न स्यात्तयं सानधदयं रुपांम
 नहि न च लसहजान च लगीति विपक्षे न च ललाडा सर्वे सादि सर्वनादि गतिविदनाम कजावध
 उक्तं कथं कालं न च नास्तसुखसंस्थित्या न वाधिरुं न नाम कपपर्यन्तया प्राप्ते गजवर्म
 हाह किहासं धनन नूकानं यथादिता न किं कुमार्थत्वात् महाधानहि हि किं सर्वमानसं डासकाध
 हयानक ॥ आकाशादिदिश्यं न च कयत्तह कानधहासादहासं महाहाधिरुं रससायसाय
 हासखदना धनी व कुमिवाहयसत्वं वाधिरुं यस्य सुखसत्वं वाधी सादि धनमभ्रवला
 नमिदी पृथगा न गच्छेत् स्वार्थं मरुजवतिनिन किं गयानां रागवाहिसुखत्वात् महासुखं मय

तादिकि वरुमनो गाय विरुनि नाधारुं कानधनि नूधय वाधिरुं वृविद्याय वधनि नाधि
 रुं न नाहवहं मिवस्तानं रुं न न च पुलाधनपवध किं महासत्वाधनमोका ॥ नरुजवति ॥ ज
 तकि ॥ पक्षे सादि ॥ विधनानावर्तं वायपक्षे रुथा गहवर्तं लोदजकं रुदत्वा रुदकमिति व
 र्तिना दी नाम स्य किं गायकया ॥ उच्यते रुदत्वा वदवधमो वायनं रुदितं रुदितयसमाय
 धपृथिव्यापि पक्षे रुदत्वा वपकिं रुयमसुतिहृदगुणैश्च कंसकलमवमनाविवर्तमानात्माया रुदं गुं
 यत्तम न च वेनाच नादि पक्षे न मिश्रवत्वात् ॥ महानत्वं वायस्थिनी रुवसुधिरि नाने
 माहासुता न च मय रुति विरुं सखनं धनन स्याम रथकिपां यामा वाय रुदं कं ययय
 माधिरुं ललाडा सर्वे सादि सर्वनादि गतिविदनाम कजावध
 वजवधि न की साह रुं रुदि वा मया मादि कुमादका सादि नयं दकि रपृथिव्यां दि कुमात्वा
 लाद रुं रुतं न हय रुतं पक्षे वाय पाग ॥ न गयानां रागवाहिसुखत्वात् महासुखं मय

न क ल्य ह व ह दु धा य द ह क ह ह द वि क ल्य स्य गुरु वा य गुरु पि वा ॥ स्यु म्भ मा ना द ह ह व व र द
दि म्भ आ इ लि क स नी द प्पा म हा स र्वा न ह व न न क मा म्भ आ द व क १ क न ल म्भ इ क म न्भ ग वि मि
म ह र्वा दि ॥ प्पा म्भ प न नि नो र्ध न ग्गु म्भ न धि प्पा ना क क ल्म न स्या व र म्भ १ न्भ वि क ल्म नो दि का य स्य क
ह १ क क क क दि ॥ स ह र्ज स र्ध न स र्ध व्या प ना ल्म हा व १ १ स र्ध ह वि प्पा म्भ य ग्गु म्भ मा म्भ द स न स
क म्भ प क व क प्पा म्भ क वि म्भ क क न १ ह क ल्म न १ ॥ स इ दि क वि म्भ म स र्ध ह ह ह क न
ल्म नार्थ १ य म्भ ह स फ ह स ह म्भ १ व १ क व ह स न व म्भ म्भ मा म्भ धी व नि न क न क क क नि १ ता न्भ
न स्या व र्ध प्पा दि क क प र्ध म व स्य व क ल्म ल या स ह र्वा ग स म ग्गु म्भ म्भ क स्य प र्ध व १ व व ल्म न क म्भ १ स
१ य दि क न व धि वि क म्भ क नि १ म र्ध व नी १ स न १ १ ल य म्भ ह क म्भ र्ध म्भ ह स र्ध व क धि ली
वि म्भ क नि न १ म्भ दि क न व स १ न १ य म्भ क ल्म न ग क वि न्भ मा ल्म १ क व वि न्भ मा क न वि

लं स म्भ १ क क क वि क १ दि क म्भ म्भ स र्ध न्भ नि ह ह क स वि क म्भ य क म्भ क म्भ नि वि क दि क म्भ न
ह ग्गु म्भ दि म्भ क न प न स र्ध न न म्भ क म्भ प व न प र्ध म्भ क क प र्ध म्भ य म्भ क न म्भ क म्भ क म्भ क वि
व क क म्भ नि र्ध व नी य स क य र्ध १ स र्ध म्भ क म्भ क वि क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क
लं स म्भ स र्ध स र्ध वि नी व धी र्ध स र्ध क १ य म्भ क म्भ क वि क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क
म न स र्ध वि क १ क न १ १ प्पा म्भ य न ल्म य व क म्भ प र्ध नो सि दि क ल्म स ना ध १ १ स र्ध व म्भ क म्भ
ध १ १ न ह स क न ली ना य म्भ क १ स र्ध सि दि क ल्म नो प्पा म्भ प न नि ध ली ह वि क म्भ क म्भ क म्भ क
स्व स र्ध क १ दि क म्भ ना द स ना ल्म १ क म्भ न १ स र्ध स र्ध म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क
वी ना क क न ल्म स र्ध म्भ क ल्म क ल्म म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क
ल क म्भ क म्भ स र्ध म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क म्भ क

112

न्यादिना नृनाह नृनादर्थः विविदिदिदिदि॥ स्वर्गमज्ञावधुक्तिमरुशक्तिंरुह ननसनाललनामध्याः
यचिरुणाचिरुनयनिर्विकल्पसुखानरुह नसिकायागिनारुह नसुखवभायनादंमध्या नननरु
नयनरु नदिकालप्रविहंमरुह नदना नपलका रुहिनंमध्या सुखजामपदना धेवधुणां सूर्य इनाचि
रुह विरुमासं सध्या देह न खेषमृगपदमकायागिनां सर्वकालं पञ्जकी रथय रथव इवुजकि स
सुखजामवाह मध्या पुष्टनरुस्या नापिक विरुस्यामृगपदं ललाटा रुहिनंमध्या सुखजामपदना धेवधुणां सूर्य इनाचि
मनरुयग ॥ यधुमा रुतिनि विरुसक्ति विधुविमनपासहामडायाया कामिनीरुयासहसमनसकीडास
रुह संहाकाया संलीयमाना नृपीस्व ना नृका नादया सुख नानिका दीनीरुत्यनिधागलजुधानव्यजन
लार्थेयनरु रुह ननिसत्त्वार्थ निष्ठा यसंहनकि धर्मतायां विंभक्ति। न्यायातालादरुधेनंरुनइस
धर्मकाय रुह ननिसत्त्वार्थ निष्ठा यसंहनकि धर्मतायां विंभक्ति। न्यायातालादरुधेनंरुनइस

नंदावयस्य नरस्य चरुवर्गीयर्थः ४ आदर्शमनस्वरुवः संलग्नकाया वायुपुष्पवमः ४
निकीरुतलामनासनादाः स्यः वरुणादि ॥ महकपयनमाजुनविशार्त्तसायलाह ॥ मालाकादि
विलसन्स्यानपलकानिर्विकल्पानां लम्बनधुंभुवनिर्मलं जालाकडदिति ॥ गोधिचिरु सर्वाः
मधिमलंगरुसपुक्रुमिकालयविलसनां नपलकादालाकापलसि ४ सायसं ध्यायुकागं
महान्सर्वार्थसाधकत्वात् ॥ वरुनिष्पादि कालेव कृताशानपलकप्रकाशमधु ४ सजवः
रुमध्वनसूरवनाधिक ४ षड्रुवापि नागडकं ४ रुनरुनकिनं धापांदाभयादाधुयाधादिगि ४ रुदि
नसना ॥ आदर्शनम् ॥ १० ॥ पयवकुधासाह ॥ पक्रुविमल्यविभुसंसास्त्रभामकासिगाह
वगतत्वं पुथिवादिचदुर्वा ४ रुक्मपरस्त्रविद्याधिरविषयाधयक्कु ४ धनाः ४ पक्वस्त्रनं ४ मरु
आध्यायकनादिपनिग्रह ४ नासदिवगानां यनमरुहृष्टं रुलने ४ स्वाहायमवा ॥ गुह्यकान ४ पल

सावधौर्गेविभुतात्मादिविकल्पकाला ४ मधमापक्रियरुलान ४ माधिमरुध्वा रुनरुनकिविकल्पाध ४
वरुथलरुहानां पक्रियजानां नैना ल्यनि ४ स्वरुवता किंरुहियाह ॥ रुषांमालिमयस्त्रनवानाय
यस्य मुन्यनिष्ठं यस्त्रवंगरुप ४ कंस्त्रवंगरीदीकिनरुधकायाविनरु ४ वागवाय ४ रुस्यकाभनादिगि
वनगकीनमनरुयमानत्वनोरुनंस्र ४ गुंयस्वरुवप्रकासमान ४ पनाविध्विस्त्रमरीकं वरुडरुस्य
दिवाह ॥ गक्रिनरुपादिधर्मादयायमं नरुल्लारुधर्मादभकत्वात् ॥ वधर्म ४ भवध्वमहास्रवविनरु
कसर्वेलिहं सस्रुस्रुपंस्रुजविस्त्र ॥ नत्नमीवजगद्यापि ४ यीनेधयस्त्रनंरुहिरुडुभं यं नरुपगाह
यनर्थमाह ॥ सकलं लोकिकेलाकारुनरुस्त्रवंगमयात्सगाधविस्त्रनिधर्मगाहिरुडुपत्वात्
रु ॥ निर्वाचनरुमस्रुगु ॥ यरुताह ४ रुकंस्रुकादग ४ मप्रुगिष्टिनिर्वाधमहाभारु ४ रुन ४ पक्रुविना
मक्रु ॥ विलसन्स्यानरुसर्वलिषनमिगिप्रुयेयंदवरु ४ रुहिवदनं रुधर्मकाभस्य भुस्त्रसमरुलस्यन

वस्तुस्वनययहिनेहसिकासुजावमुविभषसुखरुखादिप्रहिनाशविद्यामाह॥५॥प्राणीनिसिनि
 शनिर्माधसमहाग्नेनयकायसुयानेकाह॥५॥वक्रागुक्ताभिदिकेनिनयस्यिविद्व्यापुस्तस्यसास
 नानाडीगहलूननानानय॥५॥एकस्मिन्नेवसेरुजकुक्षसर्वरावानयलखम्मनामाह॥५॥निनासंदेसा
 ॥५॥नस्यकुक्षनेषायंषागुक्तायांस्वस्वनेषादिनिमसंस्फुगकायदमनाह॥५॥नयैकाहनय॥५॥यथानाना
 व्यायाः॥५॥यनानाजलुष्विविधनपामायानपायाफसर्वका॥५॥विकल्पैर्वर्षयिदुमसकत्वादप्रधृष्या
 नागासहज॥५॥विकृतिरुमधषकुक्षवाधिविरुवजंस्यावस्था॥५॥ननुधर्मेषुगन्धनस्यकेकुक्षंभक्तयवि
 यवद्विष्वनयानकथकिहासस्वनमहानउदय॥५॥सुखाधिसोयस्यसहजस्यकुक्षंनैक॥५॥सहजचकु
 यसमंरुधीय॥५॥यस्मादिधसुदिगियजनममयस्मिन्पूनीयहहासायस्यगगदिरुनिसहजाने
 यानिकृतिन॥५॥पुष्पोमिहंपूनर्षमिहियगिनांकथमसोस्तुअह्निग्राह॥५॥दिव्यादिमहामुडाकुर्षावे

स्मिन्॥५॥स्विनसमाधिनाजकमधषाठमकलावर्धनवृद्धिपृथिवीलीषहगायकेरुसीलीयत
 पिपरास्वनज्जंनिनाधायकवययवृद्धिकमधपरास्वनलीनस्यविरुस्यपराधनामहा॥५॥पुन्यं
 नरगतधुजलसम॥५॥गलाज्जयहपृथिवीरुवास्तनामयचयवृद्धिस्तनप्रवाधाहुदुर्पाहिर्गयसुखा
 ॥५॥पयदभकलानामवकुयवृद्धि॥५॥किथयधुगवस्यजवषाठभीकु कलागुक्तापिरुनंग॥५॥स्वध
 वृत्त्यादि॥५॥सर्वधर्माधंसहजेकनसस्वेननिनाधारावाहसर्वजनकमनीयत्वं॥५॥स्वाधिष्ठानं॥५॥
 ॥५॥भिलकुक्षानीचक्रांकहस्तगदिनी॥५॥असिधनव्यजनोनिस्त्रिगवाधुदुर्नंग॥५॥धनगवाजंकुलया
 निस्तननपत्वादस्यानयकायमुसत्त्वानकम्पयाजाह॥५॥सचसंस्फागनिर्मानकायालकुक्षामय
 वादवसुषादयजवंचयागीनरुदनरुव॥५॥रुदहंशुक्राकानविरूपपाय॥५॥सखपरास्वनं॥५॥नयका
 ॥५॥नेनपिहृत्पर्वसर्ववजपमसमापयवलकुपदंसमाधुपयवृद्धात्मकमरुत्सर्वजगदपादान

धर्मलोकनामिहियमकमलंभरादृष्ट्यादृष्टकुर्यात्पारासुखमिहयासुखंअत्रनविस्तान॥६॥
 ॥यमक॥सहस्रसनमवननामाकन॥संवत्सगुक्षनत्वाथयत्वा॥पर्वक॥भदमाभिविद्यारुवप
 ॥सुसमलादिद्युगदइहंवाढकवासदायलिपिकिरा॥७॥पुष्पादिहवादीविद्यासारुववम्बहकु॥
 ॥विस्तनादीन्यष्टोक्तमर्गक्रम॥८॥वर्णिनावनदत्तामिनिनिकमादनिगतमिनिनिकमदर्शन॥नूपा
 ॥९॥कुर्यात्क॥शीलस्व॥आदिवद्वगुथप्रफि॥१०॥कमधिगच्छित्यर्थ॥चतुर्थसहज॥कलषव्यालना
 ॥११॥स्त्रीयवाना॥सहजविहृद्विज्ञानलंकनामिहियमकमलंभरादृष्ट्यादृष्टकुर्यात्पारासुखमिहयासुखंअत्रनविस्तान॥१२॥
 ॥सहस्रसनमवननामाकन॥संवत्सगुक्षनत्वाथयत्वा॥पर्वक॥भदमाभिविद्यारुवप
 ॥सुसमलादिद्युगदइहंवाढकवासदायलिपिकिरा॥१३॥पुष्पादिहवादीविद्यासारुववम्बहकु॥
 ॥विस्तनादीन्यष्टोक्तमर्गक्रम॥१४॥वर्णिनावनदत्तामिनिनिकमादनिगतमिनिनिकमदर्शन॥नूपा
 ॥१५॥कुर्यात्क॥शीलस्व॥आदिवद्वगुथप्रफि॥१६॥कमधिगच्छित्यर्थ॥चतुर्थसहज॥कलषव्यालना
 ॥१७॥स्त्रीयवाना॥सहजविहृद्विज्ञानलंकनामिहियमकमलंभरादृष्ट्यादृष्टकुर्यात्पारासुखमिहयासुखंअत्रनविस्तान॥१८॥
 ॥सहस्रसनमवननामाकन॥संवत्सगुक्षनत्वाथयत्वा॥पर्वक॥भदमाभिविद्यारुवप
 ॥सुसमलादिद्युगदइहंवाढकवासदायलिपिकिरा॥१९॥पुष्पादिहवादीविद्यासारुववम्बहकु॥
 ॥विस्तनादीन्यष्टोक्तमर्गक्रम॥२०॥वर्णिनावनदत्तामिनिनिकमादनिगतमिनिनिकमदर्शन॥नूपा
 ॥२१॥कुर्यात्क॥शीलस्व॥आदिवद्वगुथप्रफि॥२२॥कमधिगच्छित्यर्थ॥चतुर्थसहज॥कलषव्यालना
 ॥२३॥स्त्रीयवाना॥सहजविहृद्विज्ञानलंकनामिहियमकमलंभरादृष्ट्यादृष्टकुर्यात्पारासुखमिहयासुखंअत्रनविस्तान॥२४॥
 ॥सहस्रसनमवननामाकन॥संवत्सगुक्षनत्वाथयत्वा॥पर्वक॥भदमाभिविद्यारुवप
 ॥सुसमलादिद्युगदइहंवाढकवासदायलिपिकिरा॥२५॥पुष्पादिहवादीविद्यासारुववम्बहकु॥
 ॥विस्तनादीन्यष्टोक्तमर्गक्रम॥२६॥वर्णिनावनदत्तामिनिनिकमादनिगतमिनिनिकमदर्शन॥नूपा
 ॥२७॥कुर्यात्क॥शीलस्व॥आदिवद्वगुथप्रफि॥२८॥कमधिगच्छित्यर्थ॥चतुर्थसहज॥कलषव्यालना
 ॥२९॥स्त्रीयवाना॥सहजविहृद्विज्ञानलंकनामिहियमकमलंभरादृष्ट्यादृष्टकुर्यात्पारासुखमिहयासुखंअत्रनविस्तान॥३०॥

नारदं च वत्सल्यमयमिति न च यथा स वाक्यस्य न चार्थः १ न च ध्येय आह तत्तामसा २ नार्थः कथा न च
धीत्यस्य लक्ष्यस्य व्याख्यापज्ञानं तुल्यं न च नार्थः ३ न च मयथा स्यात् ॥ लक्ष्यं तत्तामसं प्रवृत्तं न च
यमगं कमिति न च ४ लोकि कासाव कुप्येण मया देवम क्त्वा ॥ चतुर्थं पञ्चा १ लक्ष्यं तत्तामसं प्रवृत्तं न च
यं लक्ष्यं वदतु नामान्यथा व्यागमय किं स्याम कुप्येण वदतु लक्ष्यं तत्तामसं प्रवृत्तं न च
२ अथ मुमक्षुः ३ विपदमानं दसहस्राद्या यो ज्ञानं न दसहस्राद्या यो ज्ञानं ॥ लक्ष्यं तत्तामसं प्रवृत्तं न च
४ सहजानन्दयामध्यापनमविनमाचनानन्दयचतुर्थं लक्ष्यं तत्तामसं प्रवृत्तं न च
लक्ष्यं तत्तामसं प्रवृत्तं न च ५ अदिष्टादिनां सप्तसप्तमस्तनन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं
तुलाजपनं पनयाच १ न च नानावदक २ सहजानन्दयं लक्ष्यं तत्तामसं प्रवृत्तं न च
यावद्विपनमानन्द ३ सहजानन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं

५ गगनायम १ नानागगं तुल्यं न च नार्थः २ अदिष्टादिनां सप्तसप्तमस्तनन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं
अदिष्टादिनां सप्तसप्तमस्तनन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं
३ लक्ष्यं तत्तामसं प्रवृत्तं न च ४ लक्ष्यं तत्तामसं प्रवृत्तं न च ५ लक्ष्यं तत्तामसं प्रवृत्तं न च
दिक् विपाकं न च विपाकं सखनानन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं
महासखनानन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं
वेनाम्भं धावका देवताणां न हि १ न च नार्थः २ अदिष्टादिनां सप्तसप्तमस्तनन्दयं सखनानन्दयं
अवगच्छया ३ लक्ष्यं तत्तामसं प्रवृत्तं न च ४ लक्ष्यं तत्तामसं प्रवृत्तं न च ५ लक्ष्यं तत्तामसं प्रवृत्तं न च
पुष्टं कायपनमानन्दयं पनमानन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं
सहज १ सहजानन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं सखनानन्दयं

22

॥ एतच्छ्रुत्वा संविनमपिन सूरवि कल्पेन यागः ॥ मध्यमपिन सर्वाधमत्वात् ॥ विनमायैव याचष्टुदिः
 ॥ १२॥ सत्मा ॥ यत्सहस्रस्य सविनमस्तु कष्टममुच्यते ॥ अलम्बनकथं विनम्रात्समागमयाख्याय
 ॥ न्यादिपद्या याज्ञानदाद ॥ १५॥ यं हस्तं हस्तं धनुर्धरं विचित्रं ॥ विचित्रं विविधं व्याहृतं लिंगधवद्वना
 ॥ त्रिचष्टिलकृष्टादि ॥ १६॥ यद्वागनागविवर्तिरिति ॥ इद्विपद्यां समिहितं विविधं लिङ्गनादवीपनीकं
 ॥ मयति कृत्वा महासूया लाचनं विलकृष्टमिषादि ॥ १७॥ ज्ञानदादिदिष्टा ॥ १८॥ नागश्चरुद्विपनीता ॥ नागश्च
 ॥ गम्यते गुप्तं प्रकृतं हस्तं त्वात्प्रसृष्टं पनमार्थत्वाचदुर्थं ॥ १९॥ अथ हि सद्यो गनहृतीयवत् नामाईनदा नंदाया
 ॥ रुदिता ॥ २०॥ धातुमस्य स्रुजामा कायान ॥ २१॥ ज्ञानदा कृत्वा चिह्नं कृत्वा नाना ॥ २२॥ चकान ॥ २३॥ धम
 ॥ त्रियष्टहाला कार्यविनम ॥ २४॥ विनमानं दावा कृष्टं धर्मचिह्नं विरलनविनमान ॥ २५॥ हस्तुतीयष्टा शुकाय
 ॥ मर्तिनियम ॥ २६॥ दास्ययष्टुमार्थं नागार्ह नहस्तं हस्तमृषा ॥ २७॥ सकाद ॥ २८॥ कृष्टं ॥ २९॥ विद्वत् ॥ ३०॥

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

धिविकं॥ कामरुवदकाविद्याअवचहितादयस्त्रानत्वात्प्राप्तवयः॥ नागपनमाविनारामविनसामध
कि॥ कार्यमार्गधमस्त्रुदियुं॥ कत्वासागकवानागभया॥ वाकाउद्गीर्णमगीमिपूककथादवायनसकथ
नवद्वित्वात्पुवद॥ सहजपयनानपादरुदनविबद्धास्त्रानंयनसकथ॥ स्वस्त्रानाहिनीविम्वगत
यनस्त्रानासास्रकजागचनिमा॥ यंदवचिह्नकृष्णादिवादिनात्सर्वचिह्न॥ अत्रयवमहाकृपस्त्रास्र
नतामप्यही॥ कृष्णस्त्रानंपुपचिह्नकत्वाह॥ एयअयनियवदंपुपचिह्नकमयय॥ कृपयच॥ हता॥ स
हान॥ यदिकिचिह्नदुन्यस्यास्त्राकृन्मपिकिचिह्ननकिचिह्नदस्त्रास्रकृद॥ उन्यहविष्यतिहिग
न्यको॥ यालावयतिमंदास्त्रानंताकावयकसविहि॥ नावलीयकनास्त्रा॥ अहाअहंपुमिविकल्प
॥ न्यतामप्यही॥ विहाहा॥ मनस्त्रानसंनिनस्यमाथापमनयविषयहागदनाहाग॥ दिव
पवमिह्यक॥ कालापलकिता॥ समाधय॥ कायादिउद्गनिर्माधकायायास्रवांसहजपवर्गकनाही

दिर्त्रापिपधिमं॥ नेवागंनावनंयस्यमधं॥ कृतास्त्रावह॥ तस्त्रावातापपयनपर्वपनसहकुमाष्ठीवचनानि
अंन्यनिष्ठत्वाह॥ पूर्वापर्वयावतोसमकयति॥ न्यतया॥ सांकेतिकावावागा॥ दय॥ वेयवदनि॥ कागुधिह
दिवद्वृत्त्यर्थ॥ वमुभावावधानसकवयडा॥ धाईई॥ स्याह॥ एवंस्मिन्दधिया॥ प्रहृष्टिस्त्रंकानिनाभाय
मन्त्रनमनकमई॥ रहिनउपनमउन्मया॥ अहंसापनममहासहनउदुवधिर्वाध॥ अस्त्राह
स्त्रनदर्शनार्ह॥ सकलकिपुर्वविकल्पपिहनाह॥ सहजसनीनस्त्रनस्त्रनमई॥ कर्माकेनाथात्तथा
धर्मधनीनापिहिहनाकाशाकवागीधनयथा॥ अस्त्रनकनसखादनाहनाहतास्त्रानविहृपव
हं॥ नतावाहयनिहवधालाहालयाहृजनादसाधनधस्त्रनपड॥ मधमकनंयावधुमधनीय
नदीमहामडया॥ यइकहूनकुमायाकुधियापिसाधिक॥ अहयस्त्रानवनिहृद्विहीहवि
यहृवा॥ अकमस्त्रास्त्रिकल्पमन्त्रावहिंन्यायाह॥ सर्वाववाधडक॥ अहपनंहत्वालावाहनिष्ठ॥

नारायणविजयसमक्षान्नद्वयानसमल॥विभुद्विस्तथाकारुण्यं सर्वपापलक्षणानांविभुद्विस्तथाकारुण्यं
यादृशायनसमक्ष॥सर्वानसमक्षानिनासावाकविकृतावावधपवधपमवधपित्तनविकसितप्रहासः
सनाहित्रीविजयगतसर्वधर्मस्तनाहृष्टसर्वहृष्टनगसिमनानाथनविकल्पानव्यञ्जनस्युक्तनाहारात्म
वमहाहृष्टपत्वात्यनदहृष्टहृष्टवाक्यस्यावावधनयच्छादहृष्टगपुतिष्ठानपमालयल्लनं॥निनाकाजल
धृष्टपयच्छहृष्टसर्वधर्मपथितिरथागतमिति॥लज्जानव्यञ्जनविनाहितानननिर्वाहस्यलक्ष्म
न्यहृष्टविधितितिगलीनधृष्टन्यमितिपनमार्थविकल्प॥कदाहृष्टनस्यादितिधृष्टन्यमितिनालम्बितिस
धृष्टपुतिविकल्पस्यारुदात॥कदाहृष्टनधृष्टविकल्पानासक्तित्थदलज्जधृष्टकथितावृद्धीन्नाग
गदनाहृष्टग॥दिव्यस्यादि॥आलाकाजादिरागधृष्टनविकिनधृष्टस्यादिवालाकरासधृष्टसंख्यालीक
हृष्टपवर्गकनातीत्यर्थ॥धर्मस्यादि॥पूर्वाप्रहायककोटिनस्यवाचमहामन्त्रधृष्टसाभाधृष्टनागहिनास्या

३५

मच्छितिवचनादिनिधनधनसकपयगतावाताप्यसत्सदसन्नवदिनास्यादिनिनाधेनवविजयमयती
दनि॥कागुविहृष्टवावाधिपक्कादयस्यवावमुक्तासत्वात्॥अकानधृष्टस्यधृष्टन्यादिवृद्धनना
संकातिनाभायाहृष्टगुक्तवक्त्रमाधृष्टककुक्षसंवाधिनपंसुखमादिमध्याकवर्तिगंवृद्ध॥यदहं
वृत्ति॥अधृष्टयाहृष्टकर्मस्तनमयादिनिनक्तधृष्टलदभायामनयलधृष्टस्तनसेयकंचकनयाप्रहा
तीजनाशाक्तधृष्टिरुथानूपायस्युद्धागतंसखस्तनमस्यविषयविभुद्विस्तथाकारुण्यं संप्रसायकन
आसनीविरूपवधृष्टीननाहृष्ट॥अवंपनंदुग्गकाजादिरिनाहृष्टवकानमहृष्टहृष्टवाधृष्टगोमहासुध
यावधृष्टमधनीयस्यादिसर्वत्रियाधमंष्ट्रियादिनाकृष्टिकन॥आवकादिनिर्वाधंइनीक
नेहुष्टिबीरुविहुंशीलमस्यवदस्तेयधृष्टधृष्टप्रहायल्लस्यनार्थदृष्टिधृष्टसिधृष्टिधृष्टकी
लवाहृष्टिधृष्ट॥सहृष्टस्यादिपनसकानधृष्टनयचमककनमसहृष्टसहृष्टनहिसमाधिवलाहृष्टसर्वथा

दिकायायकवन्धुनिर्विकल्पसादयनातिक्रम्यवत्पादिगगीधनत्वादयताम्बनवे
नादानमर्हय॥नमस्समकरुडायउवसमकरुनधीविषण्णिकित्तिवादननाडमदाहनागणायि
सुदृष्टंरुदभनाह॥सुविहस्यविरुंसमाधियरुणिसुसधनधमऊनत्वनरुइकमदानिष्ट
ल्लननादान्वननस्मृदिष्टाह॥ऊनस्मृतिस्मायागल्लममधुलजायहण्णुपूक॥प्रहात्वनस
दिगविष्णुविहडुहंरुकाटिनधीनवगानपृथगनानांजायधलाक॥सेवयुत्तपानमिताह
नानिचधीनसस्त्रिकककेकिवृद्धनयऊधंमरुमिसकानीरुगहनरुनंनिमिननिनाकनधना
काटिचडुद्विणमकउऊवसहालाकधुनयं॥ववमूपमकदीपनादिष्टि॥कल्यांतानलहाल
ऊनवरुयऊननयधनीगहनवरुयकिरांवरुन॥धीमयमनिर्विकिमानवरुमर्हिमायवाओस
गदिरुषजावरुष्टायराहडुवीमहिमहामाहकभाककहिवधनंऊधुकनिदानरुसर्वरुइष्टव

विदिहंदिनिहंरुद्वीपय॥कनधवभदिहि॥मल्लरुडुद्विपवनपक्षननमान्विकल्पयोनैधि
यकिहमधलागवाह॥पाहकविकल्पइष्टेनयचिरुक्रमलायहानादिहि॥ऊववरुइष्टवदलाहल्यपा
मिसनसकासकहिरुडुकीवष्टि॥रुगंधयडुपूयल्लमल्लवल्कलादिहैषर्कयस्यता॥रु
खादि॥रुइकंजासनामल्लययना॥रुकाभासुमर्धनिहिता॥ऊगपूककिहल्लेवत्तयासुमयार्किमि
ऊधुकरुधंनमकिववनालाकायगनडुपूसपानमिताहनमधयंसातथागक॥पनमार्थसिद्धि
वागीधनमधुल्लमवरुमीनिष्टमिग्रागय॥ऊपूषडुग्यादिकालचक्रुह्योख्यमहाथानग्यादि
वनकि॥सवापटपृथिव्यादिऊनूयाधीपक॥ववंसर्वा॥किहायधुधिकभाहलाय॥सकवि
विंगकिनऊग्याधिपूकनऊग्याधंषष्टि॥रुगला॥किपूकनाकनधकालचक्रुदवतासंख्यायादह
कीसहयभासनीनाथाह॥दगदिग्यापिपुलाधनरुटल्लस्ययना॥पनमार्थविंनवरुधर्मरुस्यधु

हलिकचकालीखर्कदधुदकशाङ्गितकृपायायहनिस्तेऽसाधर्मोदुर्गतामाजायाप्राविपुलं
पष्टिनकमयाऽसानंरुलत्वेनादरुवाधिविरुवजऽअंयलिकत्वेनपप्रत्यनर्हनेउभर्थाहथा॥सर्वा
नाचनत्तदधुदुमिवधनिनावनधत्वाकृन्त्यत्नसर्वरावस्वरावऽमहानाग्यधिपतिऽ॥पिहसु
आगकस्तेनकायत्वादसमहायागमहिरुगवान्तरुसत्स्वरागकऽरुगिवचनाह॥स्वादीनामकत्वे
उपसृपायात्मककुरुऽशुर्त्तर्धमधवहिरुवाकृन्त्यधीऽसर्वीत्वाचनाधानिकचकीगिनत्वा
आकावद्वादयसुवामीधनोक्तनकत्वादकीऽगुन्त्यत्नसर्वरावहृत्वात्यधिधऽ॥सर्ववज्रधनाऽस
मिधत्वामहानिकुंमरुधीऽस्तननपत्वाह॥मनसिलपऽशूनमवसाजाहृत्वाहवद्वाऽस्यन
स्तीनस्तनवाधिविरुवजऽमहत्त्वप्रध्व्यापेअधवद्वानांयानिकांदिनिकवांनिमर्हन्त्यकम
न्यत्वेनावानकगुधत्वेनचसर्ववद्मयीअचिकमपातदीसनस्त्वियस्यतिस्वार्थसम्पत्तिनकाऽआ

महानिर्लेलाकक्यापिआलाकायस्याचवमप्रीषगकऽर्धिमलापुहायस्याऽआत्मापदास्याप
विल्लनस्याजनसुख॥उद्वाउसर्ववद्वानाकऽअमृगस्यपुष्टिमा॥आमाऽर्धनगसांगुक्तकऽआऽप
हजसुहृदयावचकुरुगयागिवाधिविरुविसर्जनं॥यानायाप्रायविद्धिनंतावदानदमरुम
किशुनवकुंमारुदुष्टऽपदिपुष्टाहानधिविधिविधदुष्टऽआननस्तिनीकृत्वाऽक्षनायाचिनाधंयार्ग
नी॥हृदऽवसासिधर्महीनदीउियदहनहिरुवज्रकिसवसुखमजनसुखंमार्गविरुऽगुन्त्याविम्वचि
यजुमिमिनागऽगुक्तपदऽहस्यानगंघाउगीकलात्तदधं॥मनागऽहृदऽहस्यादिर्ग॥हृदऽपजम
गुक्तवज्रमधुगऽहृदऽवद्विभक्तऽहृदऽप्राप्तऽसंस्थासानयित्वागुक्तयमंप्राप्तिकनहूमिदयफुवति
हृदादगसर्वप्राप्तानांरुपंनेति॥ ७ ॥अहंगुक्तकालानालनागगंगुक्तविनमसहृदयामरु
नपक्षयस्त्वत्पादगगंदंयारागुक्त॥हृदिकस्यगुर्वस्यगुक्तस्यपुक्त्यीहृदगमनंगुन्नियवभाहृप

दक्षिणागता सा साह मा जयित्वा विभक्तिमिव पतिं शुभं विभक्त्युपाग ॥ नवधुं पतिं विवद्वत्तु ॥
वाचस्पतिं कुरुते ॥ १ ॥ उपपन्नपदं कला नागस्य सा हि कुरु कला विनागस्य सा दोसह ॥
अहु क कायवाक्चिह्नं पाथीपाथसंघटननवधुं लयदया ॥ २ ॥ नाह क धुनि ॥ ३ ॥ नाहि म धुलका ॥
इधु क ॥ वमति वामसंघट्वा ह ॥ ४ ॥ नपथा न ॥ ५ ॥ वव वम मधु न धा धि विहं सु ॥ ६ ॥ मी क य प हा ॥
धुव हि ॥ ७ ॥ सा क न म न र्ग ॥ ८ ॥ पं ॥ ९ ॥ सा ध र्मा म हा म ॥ १० ॥ क र्म म ॥ ११ ॥ प नि ॥ १२ ॥ क र्म न म ॥ १३ ॥ वि व र्ति ॥
स कं ॥ १४ ॥ धु ॥ १५ ॥ का द न न न कि व र्त्ता का नं ॥ १६ ॥ ह स र्ध ध र्मा ॥ १७ ॥ र्ग मा दि ति ॥ १८ ॥ ज ॥ १९ ॥ म ॥ २० ॥
रु वि ॥ २१ ॥ इ म हा स ॥ २२ ॥ वि व र्ति वि हं ॥ २३ ॥ र्ग म न न ॥ २४ ॥ न न वि ग म ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ न स ॥
ना न ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ दि ग ता ॥ २९ ॥ र्ग ॥ ३० ॥ ना दि वि ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ वि वि ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥
व ध ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

जन्मा यो स न न दि यानं ॥ न ह त्वं बू द्या दि ॥ १ ॥ ख क द ना ॥ २ ॥ म हा य द्वा र व व ॥ ३ ॥ नि रु कं ना ॥ ४ ॥ वि न वि न
या ह वि म ल ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

३८

[illegible]

पिङ्गलाधनधमननेवपुलाधननपननराह॥पृथिव्यपुगलंवायोवायुआमिपुमिष्टिग॥मप
वीजंयसहस्रजद्विहिसिधविजउपनमधनकरुसहिउंमि॥लोकीवायादि॥करुविनयवन
चिहनिर्वाधाम्वाकस्वकनधधमसं॥सर्वपांवलरुवानांविमुद्रिरुथगएक॥१७३३७
रुथपिनिर्मानकायानांनयनेनात्मभव॥मनसादसत्वं॥धर्म॥स्वनूपमस्य॥मन्यगयाचन
नकिचिन्नुकयंरुतंरुतदसिर्विमवक॥१७३३७॥विचूतिऊधमुर्वा॥सहजपविष्ठाकानदादयाय
गुरुगुवाधिविरुनस्वापिकत्वाह॥मुषपमाज्ञाकर्मकनिहंसहजंविजगते॥पश्चरुगेवर्द्धि
विषय॥मनात्मयकपृथाऊनपवीपस्यवयसूके॥यसाववमास्त्वलकतधनधमडुमी॥१७३३७
ननिआहूंसदधनवाहूँकि॥सर्वधर्मा॥सत्वादिउगुधसंगहीना॥पवकायवाधिकायाव॥
ता॥समसापृथकनानांनिर्मलाकाचार्यां॥विमलासेवज्ञानंरुलावस्थाहृदकीटि॥गस्यास

निक॥भनदमलमध्याङ्गगधसचिरु॥समेतताकर्हिगलावास्व॥समाधिरादिनिर्विमिलांनारागवाहिस
वाधि॥कदनि॥स्वसवययादि॥सहजपियारिसंब्रामयकरुद्रपुष्टिगपांमध्याऊनिनालम्बसननति॥
हृग्ध॥॥जवलुगदपसाभधट्टि॥प्रसनतीतिन्यायननिनालम्बमनाइनकदर्भि॥उपुषादोमनारुवादयन
सनमवाक॥ ० ॥ ३२ ॥॥इ॥रवा॥सुरवा॥इ॥रवा॥सुरवा॥विकिसुष्टिपिपुकिह्यसमत्यचासुवमुताव
ऊन्याविषयत्याधिनाचनधाइक॥स्वध्यातवूडिगनिविषया॥कर्मडियाधिक्रिया॥पुष्टकफुवप
कवाहवगाराहद॥पन॥सफरधिति॥कदिवाध्याऊकुमुमयायानि॥स्वध्यात्वादिकदावपकमधुलवाह
नधमदिष्ट॥पनमाजनसनंकलमध्याऊगुर्थ॥कध्याऊसहज॥कयवाह॥कानदादिविष्टकुगारुगला
वाहनीनिर्माधादिन्यास॥रुमामरुपी॥सनकायत्वादवयम॥कहिनाध्याकनाथ॥महामाप्रतास्वन
निकानांपुस्तममृदककुंसाह॥॥कमुनध्याऊगुर्थ॥गुनेकमार्पत्वाह॥माहादवमाहनपायकिह्याह॥स

三

कृत्वा नागवाहि सभाधित्वनावलायाह ४ वरुणादि ३ कृत्वा नागवाहि सभाधित्वनावलायाह ४ वरुणादि ३ कृत्वा नागवाहि सभाधित्वनावलायाह ४
 गलम्बस्त्रनेनति ॥ पञ्चतकचिन्तासा ॥ गलम्बस्त्रनेनति ॥ पञ्चतकचिन्तासा ॥ गलम्बस्त्रनेनति ॥ पञ्चतकचिन्तासा ॥ गलम्बस्त्रनेनति ॥ पञ्चतकचिन्तासा ॥
 शोमनाहवाद्यननिनाहसीकृतस्व ॥ दीवट्टे ४ सफहि ४ सचत्वाभिंभातां ॥ पञ्चवज्र ४ दननपञ्चवज्र ४
 यत्रासुवमुतावदवदकनहितासुविताहत्वनसमासुयस्त्रनकसामनाहत्वननकमष्टिपिकाभत्वनस
 ४ पञ्चकम्बपकमधुलमनडाहकमासुय ४ ॥ गमसव्ययपकसंकुमवभाजकानीसुहसिवष्टामनिव
 यकमधुलवाहकविषयडियमिनिनक्षत्रिन्तसम्बद्धव्यवहनत्वासम्बद्धीतिकृत्वा ॥ सर्वाहीष्टक
 विष्टकृत्वाहत्वात्वन ॥ सर्वधर्मभुक्तयैवरुववासनाहृदनपुहास्त्रनदर्भक ४ कायादनन्यस्याह
 महामापुहास्त्रनंपर्यामिवाहृदनाहत्वाभावा ४ ॥ सहज ४ ॥ सार्धन ४ ॥ जीवीनायंकृद ४ नागादिच
 गार्वाहिस्याह ॥ सवय ॥ सुदि कल्पनयाहत्वेनासंसर्गनासर्वकल्पनापहीनापहृधीताचरुसादिहत्वाधि

[illegible][illegible]

मनलोकिविबुधाईगतेलाकारुनासंगुहकंसखंनधडीतिविगतनधलाकनधनसखंसर्वधर्मगुनयता
वक्र४६४वरलुपटदयसं॥ नद४४सैकासाशनस्यादुगी॥ नसमध्यायांप्रकृतात्महाससपदनिऊ
पेल्यमस्यहावानामहाविगगनमवव्यायकमसीरुप्रहासनस्यनपवरुनमस्य४मन४धसर्वदिहिनांम
याथाधिविहंरुदुस्यप्रतिष्ठयास्तिनहुत्ताकातामनन॥ निजालम्बनूपागुनयतामहीधवायतिभुक्त
नधप्रतिष्ठित्वास्तिवीरुहमननकिवा॥ विहितयंदमाहवंशस्यादिवजाग्रदिवृत्तावृंमंभपय्यभमा
याक्तामकलादयात्मकं॥ याकप्रथमंकासकला॥ प्रकृतिप्रकला॥ इदयात्मविस्तनधादुसुद
दकवादिहचनध४मुकुहंकावहृपुसुखवहिरुवात्मस्यनिनावनधयादिपक्षदमगुनयताकनना
मध्याह्न्याह्न्याकवाति॥ प्राध्यायामस्यादिवृत्त्यावाहंप्रथममथाव्याख्याने४वकध्यासावन्धप्रमुत्थ
पलरुनासंगारुव४मृकासुदुल्यध्यानीविहमहाविहइसामक्षिमिगी॥ मकिदिस्लादीविनगधन४तदाह

४निप्रत्यादिविकिस्यसकलांकुरयिदुंकम॥ सर्वध्यायपनाहरोविदुलंलपनमिस्यकनध
ननांजिनात्म४६४धरदिव्यायेर्जाद्यादिषूदहूमिति॥ सर्वविकल्पवास्तनाहिधिहंविगंनिवि
वाजवपुलसवनरुयाधुन्या४पनमार्थ४६४नकि४पदाह॥ सस्वर्गमशंपातालेनकमूर्तिरुवेरुदुध
॥ प्राविष्ठा४पाकृत्तुवर्गविषयानयमहायाधुवृत्तिरुदधधुविस्तनाया४६४दियानांविषयग्रह
यदलात्प्रतिकृतामहदवन४सवासानमिहिकृत्वास्वयमवेहत्वामृदमचिरुचिरुजनधसुनहिस्
प्रेगम्यहावानामकृतिमनपनकिनस्यउरुयानकि॥ निष्ठाकारुवजुवउरुदकपिमिथादीष्टंननकह
४विवागस्यलाकमामध्यागसुरपलर्थ४सरुप्रवधरुववागमदिमहिकृतावान्४प्रलम्बनप्रवि
नस॥ मविष्ठाकंभसर्व४ग॥ नदिगमसर्वावृत्तिविगम४॥ र्माधितपृथिव्यादिउवाहिवाधिविहंरुधक
दिकल्पहिवास्तना॥ सहजवसर्वविकल्पाहृद४पाध्यायधइनेनपुस्यनममिथलासहनाग४सा

[illegible][illegible]

उयसमवधानं दत्तामचिह्नं खचनलंददाहि ॥ जगत्स्वपारिसमाधिहि चोडिपूयकिसानिहा ॥ लिमादि
सननसर्वसर्व ॥ खहनासिद्धिं सखचक्रं पुत्रं वंशमदवगुप्तमगंवलि सखनगनीनमिति विदुष
धानिध्याध ॥ पाणिमकुशिमलिह ॥ नकादध्यातनं जानतादिपनमार्थकजत्रवयमवानवाकाग
महिषदसा ॥ अरुधुतीधर्मादया नरु सर्ववृद्धधर्मादया ॥ वायनिना ॥ खतथागतत्वनरु रुमीगतभा
हृरुसमातादिकमधपूथिआशंगर्तकमाकागमधुलं वहीति ॥ इयदगसंजनालमनयवनाधुसूधि
प्रादि ॥ सत्त्वार्थयकाखचवाधिविरुमिति सर्वसत्त्वामरुमहाकनधाकार्यमाहानचार्य ॥ निसरु
मनसिगतधुसूयवृक्षप्रापराखनलंसत्त्वानां यस्यादवताधिमरुसुखदथासनात्मनसिजवावग
रुखनिनालमनमासुहृदि ॥ मृदादिवर्दीधियाधिमार्थ ॥ कुतुहनिवानकपक्काप्रसवासप
पुरुसर्ववासानाहिचिह्नं चिरुमिति निनालसिकनानिधुवदरुहति ॥ सनननलंधवेवावनशमिनस

॥ ४६ ॥ धातुलोचनानाहोनयानाडियं डितीगर्हसुखे ॥ नपंचपवजानयन्य ॥ पक्कमविल्लनं स्कंधम
हासनाहिकुंमितिपुलाभनालुसुपांस्कंधानंपुलाखनंवेवविपुडिर्विपुडंरुखनमिति ॥ सर्वप्रवका
मावपिपुत्रकवृद्धमावपिवाधिसत्त्वमावपिमिडिडुकामनयमवपुसयानमितामिडिडुयसुपु
विपुडंरुसुधर्महासखकायसधर्मायं ॥ अविद्यादिदि ॥ दत्ताप्रपमावेवनयनालपविग्रह
कथकगगह ॥ अविशयासंस्कावासां ॥ दत्तावावर्तनमिजधनरुखनाहिकुंमिति ॥ गगह ॥ सना
उक्तं ॥ उरथागमलोकावसत्त्वदृष्टिसमरुवर्हिति ॥ पीथादिनालनरुमाहयनपी ॥ पुत्रकानु
मावपी ॥ अदिव्यकं ॥ अयातापी ॥ अदिस्कातावाधिविरुपूनिता ॥ सखरुहनीयुक्तं ॥ दत्ताप्रप
रुवंपुत्रमयिविपनिधामा ॥ रुरुवृक्षया ॥ अतिनपुल्लसमदयसया ॥ रुरुवमिहिसमदय ॥ रुरु
रुरुप्रवग्धकायादिसंरुकालाकादियकमिति निना ॥ अनिनाधसंयप्रहाहनधनिनालधुविरुहति

[illegible]

मित्रादिकृत्यतिथिकृतनक्षत्रादिनायत्तारुद्रागमनका - एतदिधामवसुवैविधिनूपमा - स्वयम्
विद्यादृष्ट्यागवदधयस्तुष्टी - एष सर्वपृथगितिनिनाधनयुक्तयश्चिकुरिनिध्यावन्ता ॥ वि
मन्त्रिकल्पतिथिभूमध्यः शिवाः शिवाः कुरु कुरु मध्यः कुरु कुरु पादानकथा ॥ निधुं कुरु
लङ्कावकावृष्टेहपुयं ॥ वकिं संभयं संभयं सूर्यः शक्तिर्किर्तिता ॥ इयं श्रीमत्पुत्रयश्च स्वसंभय
व्याभादं विस्मयाहसिककथा ॥ कुरु दनालिंश्चन - येवतथा च स्वनवप - धा ॥ धेर्यं श्रीयं स्वमानधर्कलह
वा ॥ लङ्कावकावृष्टेहपुयं ॥ वकिं संभयं संभयं सूर्यः शक्तिर्किर्तिता ॥ इयं श्रीमत्पुत्रयश्च स्वसंभय
मध्यनागकुरुधैवविस्मृतिर्जाकिन्नववध ॥ दुस्त्रिंशवधश्च दध्नालसंधश्चताहथा ॥ अविद्यायाश्च
लविषयवासत्वशाकनाह ॥ हववइन्नरुनत्वनकाकानाविकल्पनूयास्तनिष्ठसुतावर्गायमसमाधि

नीलसुखायवसुखात्मनिस्तनस्कं भदनि नावन धारासुखाय नाकाकनमुखयंजननि। वि
नगसुखं विदुः। दिवससुखाय च। वरुमुकुपनमसुखाय नगसुखाय विधिविम्बं। स्तनविस्तना
कै। यत्पुत्रक कल्याणता नावकुमिवानेकसंलगकायेंदुभगगधमांसदिचक्रुषातसुवीकान
भूयतादर्भनाहकुमुधया। गहि सर्वथतिपिहितापिहिनेजाणांभूत्ययनानूकल्यिगं। दधम
शावकुर्विइधुक्र। मनालसक्ति सर्वधर्मनपलत्या। कनमखिनसर्वीअप्राधनेजगदर्थेकायस्या
रुविइसुसफसा। नारोस्तनाविइयाजनकसमयचुष्टुयं समीपतत्वंमहिनिनिविइधुक्र
प्रतिपत्तयति कला। नगधुपुर्हि। नाकेप्रतिपदादौ सहतादया। श्रुवाहीगुरुका लवचदानधदिह
लचकादौस्तनादयाविहर्कशहयेवगुभ्यस्तनया। गविजानधतुवावनयास्तोमनस्यसुगि। तदधकारि
महिनागगनगमहिदिस्माधयइहलंसमहसर्वधर्मानपलकसमाधिकायाधर्मकायधतइधमे

जगदर्थेनानानिर्मीर्षीविनयाभयवमाह। स्वरावत्यादि। स्वाहाविककायंविहडिकलादिवृद्धनिम
मिहुरुदाभापनधमाह। वंकात्मकत्वादिति वृद्धनिर्दृष्टिगावइधुपुर्हि। दवानामप्यहिसपनदिव्यतीति
हिसमसुगिनत्वावसित्वादसनाक्षं परं चधामृतामहिनाकमेध्याकहयध। उहयनेनात्ममहा
कवइहिकंसहजं। जगदस्पृष्टादभिकात्मस्कं येमाजादधपथ। धविनायककायादनधामुवता।
गहममंमागमपद। अधिहकाहिनाथवृत्ति। अदिहिया। नारावाह। हदाहदिजक्रपियगन्यत्वं
सखिनभेसनाह। जगतादिसिद्धागुनगहीनगुह। स्वाहुनइहययाइहिविनामालोकांनोकाइह
उपावन्मिहागजधदधि। धर्मधुनिनविभमंयतां सर्वदहिरुनिस्त्रकोर्वायीमेश्वारुयत्वा
आहमिदुहकावासायस्त्रिविष्टाउनुगविचननिहि। पूर्वांशिककुरुसुखमिहादिनाचिहविऊप
गहयथाइसमाप्यामहानागतानामादिजया। अकनस्तनतामाहयधप्रहास्तनभवनकिहन

खयं जनानि विद्या न कुरु न ययव भवि न मु न श्वैक न पर्याय यः कुं व उच्छ्रि आदि १५ का न पर्याय
 ॥ कन विस्मना धिष्ठि मिमि ति मु न्य ता क न धा रि नं ॥ २ ॥ रुकु नि ति वि चं प न मा ऊ न स्य ॥ य र
 त्वा क त्स र्वा का न वि चं प न्य क द र्भ ना क ॥ नि ना का न क प न मा शु ध र्म ता क त्वा क ॥ स न व ह क र्य र ह
 क ल्पि तं ॥ द म्भ क त्वा प्र व दि धं क दि म्भं रा व य क प ति ॥ क ता क क र्म लं न स मा ध्य र म्भ क र्म क र्म क र्म
 ग द र्भ का य त्वा दि ल ला ट का य वि कृ ता ग द व स्य ऊ न क ४ क २२ वा वि र ४ स्य प्र न क ४ ह दि वि
 ने दि वि र ४ क र्म य म्भ क ४ प ति प दा दि क लानां ऊ य ध र्म धी त्वा द स्य वा ऊ न त्वा क ४ ह दि वि
 वि चं प न धा दि क क र्म त्वा दि ॥ पु ति प दा दि प क प क ति थ या न ७ ॥ ह ७ नि क्ता द र्भ र्म क ४ क र्म य म्भ
 ति १ ॥ १ ४ का यि कं १ ॥ न स र व स र वि क स्य वि कं स मा धि य क र्म ति वि क क ग ता वि ति प क र्म न ला १ ॥
 का य ४ क ४ स र ता ग दि प र्भ स र्वा मा ध र्म धु ती म ना ह न त्वा न ना क ४ क र्म ना रा ग य त्वा दि ॥ वि ना रा ग

क ला दि वृ द्धि निर्मा श व र्ग सं स न भ न य ति ती क था ॥ वि ध स्य ति ना न वि ध स्य दि वि क र्भ द स्य ॥ य था व दि
 स प न दि य ती ति ॥ वि कृ त्वा व त्वा दि ति वि ना वि ध न वि कृ न य ४ क र्म त्वा क र्म न य क र्म त्वा क र्म
 य ने ना स्य म हा या न म ग व क र्म वि नि नि स्या द न ना स्ति क त्वा वृ ह स्य १ ॥ म हा स र व क र्म म र्भ ग क त्वा द
 द न १ ॥ म र्भ क र्म वि तु आ स्य च का म र्भ न ४ न क र्म न क न का क न ४ क दा ह वृ दी र्भ स्य यं पा ति क
 क र्म य ग न्य त्वा मि व र्भ य क न स्य र्भ फा न ४ ना धि र्भ पी क र्म र्भ य प मा द ग र्म नि व र्भ न क ति ॥ इ ४ रि व नं
 क ना जी का ४ क मि पु वि द्वा ना म व र्भ ४ स र्भ ग ४ क र्म न क र्म न ध र्म ता क क त्वा न म हा न ॥ य कि क ४ स र्भ वृ
 म र्भ ग र्भ य त्वा त्वा ह ४ क र्म र्भ ग ४ म र्भ म य न प्र भ म न क वि स्य दि न ना न पी न क वि क र्म ४ प न स्य न
 ना वि क वि क पा य न य ना क ॥ वि म स्य ति वि द्वा ल ला ट दि क र्म क त्वा न ॥ ना रा ग ४ वि र्भ न वि ध
 न म व न ति क न ना द र्भ क द मृ क सि क का या दि त्वा न वा य वि क ल्य व ना र्भ मृ य मा ना द न स र्भ ग क

[illegible]

नपर्वनिगमान्तस्तथात्रवक्तुंकारिह॥षडङ्गनामवयवमनपासास्तदात्मनगतामि॥षड्वयवज
वजागंधयस्यजारागद्विगत्यानिष्ठसंभवंपुनश्चकस्माज्जगत्पुनरायवेराग्यत्रैवसूर्यगदित्यनासकता॥
भेदाभिधेयमवगर्जंमिदंरूपस्त्रिंशंसकलाख्यागतसत्त्वकर्प्यधिमिति॥लौकिकसंकल्पबहिर्गतसंक
यःकृतवन्नम॥महाकालकलंकिनीमिवहनश्चक्रियत्रैद्वियस्यकलत्रमरुमयश्चकर्ममिविच्छासं
खण्डवृद्धिमत्प्रावयत्यपुमिताङ्गनोयाभिधि॥सत्रउत्पादिगुकादयस्त्वानसमाधनाह॥इत्यलम्वि
यदानहावातालवामा॥संतिष्ठत्पुनश्चरान्यमस्यहावन्ननिशालम्बाप्रभम्यमिति॥भागनवपत्न्यदिह
कस्वस्वपन्नविहागद्वयगुह्यवाध॥विस्मयसर्वहावधूयतादर्शनान्यान्वहावादिहाम्बिहाहिसकृत्
कल्लश्चभवत्त्ववमानवादिधर्मनपत्न्यात्राकिकसंवाधर्माभित्ताम्बुपत्न्यासंवागीत्येहयत्कल्लि
हीज्जंमिदंयथापसकृदस्माद्वृद्धश्चमयाभापिहृर्हीद्विधावनक्षकसयाग्रहस्तमनश्चस्याप्तपि

हृषिकेशादि॥ उक्ता नायास्व प्राचक्रवर्तिनः पक्षवर्तुनंग-ध्वनिगनवह॥ प्रतिसरुषनमरुषना वा
अथकिधुदुक्त्वाधिष्ठानं शतदवपनमार्थनयं यदुपलभ्यंरुसमिभुद्वैमल्यमुद्विनादभादिपक्ष
संवृत्तिसंयसंयंयंयगनर्धवर्धमिति यगनर्ध॥ सप्रतिहमन्यह॥ अवरेखादिपरिहमा-स्यकला
वाह्ययहसर्वस्वरुगवान् अहप्रतिह्यहसर्वदृक्स्थानमिष्टागगहदप्रतिधनवलपदृक्प्रति
सहृदृष्टधर्मसंलगात्साधगच्छसूक्तधृष्टगना नामयनसुनपदतिस्तनंनिर्माधमितिचत्वा
नविस्तनरुदासंसायसंसाव॥ रुद्रस्तनंविध्विम्बंयुसश्विस्तनंयगिचिरुमयाय॥ सत्यपि
वृत्तादिद्विकानियार्थललाटकायमडाक॥ वाक्कृदिविरुमप्रनिता॥ उवगस्यप्रव॥ ध
रुमडा॥ एतथागदयस्यमडायंरुद्रावागधुद्रपदुद्रस्योक्तमग्नवागधुद्रस्यस्ययाधि
गीनां॥ मदानांपर्वापनासंसादनिनीदादभाद्यादीनांधूमादिनीमिरुद्रलपगीगुभाध्वनसत्यस्य

हृषिकेशादि॥ अथरुधर्ममशुविध्वयधर्ममिष्टादि॥ माकलक्ष्मीमहामाजमजमसुखमरुधुलं कृमल
कीति॥ उक्ताकर्मायासासर्वदसदसन्नरुद्रिनालेलीहादृक्लोकाधर्मनहिनेनिर्विकल्पचारधु
पनमासांरुद्रकादिधुद्रयधीशीकानमदयस्तनमिष्टाकधुद्रगधुद्रधुद्रकसत्यपीयधनिर्माधमदि
हनत्वाहमरुधीधुद्रयस्तनिनांवचधनिनाधरत्वादनावनधत्वात्॥ समाधिपनि कर्मकृत्वा नष्टानं
रुद्रहृद्रुस्तनविस्तननपसंसावदनासंसावनकुमनयतिक्रमधिर्धमक्रमायगुकार्थ॥ अथवा
सगीरु॥ हृत्वा नष्टानं॥ १॥ पक्षस्तनमुक्तिमाह॥ रुद्रानीमिष्टादिसंयधिरुद्रस्तनमितिधि
नास्तनं सर्वापलंसेपसम॥ अकिस्तनं सविमुद्रधर्मधत्वाधधपक्षकानाहिसंवाधीति॥ आदर्शनरु
यथावहविद्याहिरुधय॥ निर्विकल्पनेवदृष्टकल्पनावर्तिरुद्रयधुद्रमायाधिष्ठानादर्थ॥ धयोना
यादिपक्षविषयास्तननपसंयधस्तनदर्थ॥ सम्यत्वेनादर्शस्तनं॥ सवत्तादिरुद्रानपलधुद्रस

二

म३ भूलां कृमल नपां सुखासवदिनमनः नारिकासपवृक्षवाकहिमिव भादमृहं हिस्त्रविषं पीवं
 विष्कल्पत्वादभुविस्थानपिवरुविधानमकलाहहसामर्थसखदेन न्नयानदिहागोविदि॥
 ॥ य३ निर्मादनायापिनेभ्यर्थादिसर्वसखं यमिर्नापियंमत्थगुंरुता॥ नृहृत्सर्वधर्माहृदनसर्वमना
 र्मकृत्तानुष्ठानं॥ अवंकवजसत्वादीहिसनविस्तनसंस्तानसंस्तवदनानुपपन्ना॥ ३३ क्रमाहृत्सृष्टि
 र्थ३॥ अथवादभनाकालः॥ नाहतास्मासनाक्रमानादनृहृत्सत्त्वमिलिकविनेयानुवाध्याकात्त्येव
 इकुत्सनमिदिविधविचदर्शनं॥ ३४ अथयत्सनमकनवृद्धमादिविहृधर्मस्तनंवायनिनाधकागलं॥ ३५ व
 दि॥ आदर्शनस्तनवांवउदङ्ग्यायुक्तं॥ ३६ अथयत्सत्वादि॥ ३७ अथमहाविदाहावसमहापटादि॥ सर्वजव
 तदर्थ॥ ३८ अथनादियमत्सदव॥ ३९ अथकुत्सत्वादिनिमकत्वात्त्राकारुनसत्संस्कृतादिपत्सत्सि
 दानपल३३ सर्वहावसमजकाहाव॥ ३४ अथयत्सत्वादि॥ ३५ अथयत्सत्वादि॥ ३६ अथयत्सत्वादि॥ ३७ अथयत्सत्वादि॥ ३८ अथयत्सत्वादि॥ ३९ अथयत्सत्वादि॥ ४० अथयत्सत्वादि॥ ४१ अथयत्सत्वादि॥ ४२ अथयत्सत्वादि॥ ४३ अथयत्सत्वादि॥ ४४ अथयत्सत्वादि॥ ४५ अथयत्सत्वादि॥ ४६ अथयत्सत्वादि॥ ४७ अथयत्सत्वादि॥ ४८ अथयत्सत्वादि॥ ४९ अथयत्सत्वादि॥ ५० अथयत्सत्वादि॥ ५१ अथयत्सत्वादि॥ ५२ अथयत्सत्वादि॥ ५३ अथयत्सत्वादि॥ ५४ अथयत्सत्वादि॥ ५५ अथयत्सत्वादि॥ ५६ अथयत्सत्वादि॥ ५७ अथयत्सत्वादि॥ ५८ अथयत्सत्वादि॥ ५९ अथयत्सत्वादि॥ ६० अथयत्सत्वादि॥ ६१ अथयत्सत्वादि॥ ६२ अथयत्सत्वादि॥ ६३ अथयत्सत्वादि॥ ६४ अथयत्सत्वादि॥ ६५ अथयत्सत्वादि॥ ६६ अथयत्सत्वादि॥ ६७ अथयत्सत्वादि॥ ६८ अथयत्सत्वादि॥ ६९ अथयत्सत्वादि॥ ७० अथयत्सत्वादि॥ ७१ अथयत्सत्वादि॥ ७२ अथयत्सत्वादि॥ ७३ अथयत्सत्वादि॥ ७४ अथयत्सत्वादि॥ ७५ अथयत्सत्वादि॥ ७६ अथयत्सत्वादि॥ ७७ अथयत्सत्वादि॥ ७८ अथयत्सत्वादि॥ ७९ अथयत्सत्वादि॥ ८० अथयत्सत्वादि॥ ८१ अथयत्सत्वादि॥ ८२ अथयत्सत्वादि॥ ८३ अथयत्सत्वादि॥ ८४ अथयत्सत्वादि॥ ८५ अथयत्सत्वादि॥ ८६ अथयत्सत्वादि॥ ८७ अथयत्सत्वादि॥ ८८ अथयत्सत्वादि॥ ८९ अथयत्सत्वादि॥ ९० अथयत्सत्वादि॥ ९१ अथयत्सत्वादि॥ ९२ अथयत्सत्वादि॥ ९३ अथयत्सत्वादि॥ ९४ अथयत्सत्वादि॥ ९५ अथयत्सत्वादि॥ ९६ अथयत्सत्वादि॥ ९७ अथयत्सत्वादि॥ ९८ अथयत्सत्वादि॥ ९९ अथयत्सत्वादि॥ १०० अथयत्सत्वादि॥

सर्वसनीनयापिभारसंवदनासत्यादेदनासंभ्रमाजनपलविमनहयासमनोजनसर्वसंस्कृतिया
भित्तिगुणगतादहंरुवायतावमुद्यामवायपुरुवांरुतिवायनिनाधेमहादेनंपदफौप्रीवाय
त्रयिभित्तिगुणगतादहंरुवायतावमुद्यामवायपुरुवांरुतिवायनिनाधेमहादेनंपदफौप्रीवाय
यत्वनसत्त्वकश्चित्पुर्वलाकात्यनलाकगमि॥नपिहस्यतिहंयहसंस्कानपुसादिहिसंस्कान
विस्तर्नमि॥जनपनसादवाकागकपुमवचकनदिदिविस्तनविषयकहिताविकल्पमुनिर्मिषययव
स्वमाभनावनसाकाकाभवह॥धर्मास्तिविलाप्यपदंयताधर्मधर्माधुन्यतायातींगताधर्म
हनवदलाचतायकंतिनविगुहसंभ्रलजनभारवकुंसमनक्तिरुवस्यस्वदुगारिगुदि॥गुखनपता
किचककलादिषकुंजहिपुकादिहिनपादितायस्कंधास्त्वयवस्वदुदित्वावाकागतावाकागवस्म
भगदिकाहिसुहृदसर्वधर्मास्तमंगतिनव्यतिवन्मुक्ति॥यस्यांयारग्यवस्थायंरुहस्वादिस्वसमि

स्वानकताजनैतिरुवहुदिर्यतादियतसवजसंस्कान॥यहयादिनपादिविस्तनानिनसंभ्रितदिन
दुहभागताधुवदालनिजकषांपुजन्या॥जनपयुधिन्यारुकावायाकागजनभारवपुक्ति॥जन
नांदिनानामगुहृदकधैर्यपुर्णकभसरुहसुखरागभलयकठिष्ठुहिस्यासंवाधनसाहा॥उवं
मिपुर्थभाकुडनानिविमहाकरसाजगमस्यरुलककविनमाधर्मकायधुवइकामहजनकायल
स्यवदुनानिवगुथजनपुकागनाहनाहस्यस्यसपुकारभाभिसुनभाह॥कर्ममइयाय
सवधसंसागधर्निमीहयातानहवकीस्यहवधुन्यतागतउरुवासाधुवदानीसहवधुसाहावि का
तिहभा॥महामायाविगविचंरुहसहस्रताहमायांजाल॥पुसास्वनादस्थानिहिसिचललाटक
धनसाहभकायवहुकपुजकत्वनपुक्तिमभाससावानमस्वनाहजनमुक्ति॥ १ ॥जनस
रुणापदनहुहयंरुहसायसाहा॥क्रमास्त्वयविनिर्नवसिचवसिधुधर्मसुहृदवजायनिव

पञ्चप्रतिपत्तिर्दिग्दर्शकपाठानां मनुस्मृत्यवस्था नानिर्वाधसिद्धता नानास्थानानां धारणाधिगम
हियन्तानां प्रतिवस्तुभ्यो यत्नवत्तया वाधयेयं नृणां विरमयति डाकनपत्त्यादा नादिसर्वपत्त
मदिक्तादिभूमिनिर्णयश्चागच्छति वधः सम्यगश्च स्वसमदयनिर्वाधमार्गसंज्ञानां नृदयस्तन
यवदिति सन्नाप्यर्थः॥ किं यद् कुंभकं यथावत्तावद् गुणसंज्ञासम्पत्तिः हि दुर्निर्णयं नाम संगीति
धनं यत्तमिर्णयं नाम संगीतिः॥ सर्वसत्त्वानामरमयकायादिप्रयानिषयानि पापनिर्वाहं प्रथमम
नाह॥ इति प्रयतिनिर्वाहोक्तस्तत्त्वार्थनीयकर्मवान्नाह॥ पञ्चन कर्मादिकं मीववधसम्पददनी
रक्षादग्राह्यताकाभारवत्ताकृद्यसमस्यादसदनत्वादनकनीसहनी कनिगिखिरुक्षिगस्तनधीम
हस्वप्रतिनामनकनी॥ मृष्यविज्ञादिसर्वनिर्निमित्तस्वधुनी नान्यप्रमदवपुस्त्य मृष्यका लेवा
नामनयाश्चिदासिद्धकर्म इष्टवर्णनं हस्तानधीधर्मचक्रादिरावतया मत्स्यारुदधामाहा ४ कर्म

निराभयनस्त्वानाविकल्पस्तदनत्वादनीसमाधि लाताह॥ उत्कर्षविहस्तादानंमदश्च धर्मनरूप
मनीवदताकायीस, माता इष्टवर्णनसीदोर्मनस्यं ४ दनत्वादि का॥ सर्वतथागता नोस्तनीमिति हृदय
नरुसंज्ञायाः कर्ममूलायाश्चतस्रमनुमखं निर्विकल्पकसंज्ञायायत्ताध्वं कुरुसाधनयनात्सर्व
आदिनोनसनां स्मृतिश्चिरुसंज्ञायाश्चतस्रमनुमखं निर्विकल्पकसंज्ञायायत्ताध्वं कुरुसाधनयनात्सर्व
गदिनदत्ताकावन्ना भाष्येहदादीचतुष्टयकनी ४ प्रोपुहभाकि कल्याणं सत्त्वाश्चक्रिरेवैनकनी
लेहवस्यानभयाश्चतस्रमनुमखं निर्विकल्पकसंज्ञायायत्ताध्वं कुरुसाधनयनात्सर्व
वर्तिता ४ यथाक्रमं प्रदीयत जायते इष्टादिदर्शनं चत्वाभासवत्ताहया नागप्रतिघमा नाविद्या इष्ट्यादि
स्थानवदिर्मता ४ अथ सर्वथाधया इष्टवदत्ता सहाहयान्॥ तदप्यभमनिर्वाधिसंज्ञा नापनक्षत्पुह
लोकादिस्त्रिपवद् धर्मस्थपनात्साह्वं तमानां॥ मनाथानां मनश्चर्चिना ४॥ मनश्चत्वाह्वनधी

किं तां नो निर्वोऽप्यपराधम् ॥ अगतिनाम नरु नमार्गं कृता ॥ हव सम उवापा न तारु स्यात्तामि नां
 तापुका भिनन स्वना लोकरुता ॥ सन निष्ठा दृष्टा दिख ॥ नाय ॥ चि नामनी नत्वमीव यथा मयं सर्वं स
 केव दुःखं किलं काय भूयता सन सा कृता नरुता ॥ अमीषा दिव नाय ना दिव दृष्टा च मिता फन य
 आ का ह रु स कान समाधि संपाद नाह ॥ गृह य धर्म काय यथा ह क रु य धर्म विग क ता ॥ अत धर्म
 ता रि नृणा ॥ उ व दृ का या स खे न ॥ सर्व ना का ने महा भू न मान फ ॥ सखा स सी या दि क दृष्टी निव गु
 या ॥ वा स तं पा ना नाम स श्री गी ॥ य र कं रं यं क रु य धर्म शु न्ना क कृता न धर्म ॥ नामा सं धा न स न
 ध र धन ॥ अन स्य स खे न न य स ही न स्थान प नी गृह ॥ स स ह व ता ॥ इ व स र व स्या म पि वां कृ य
 ता ॥ न पं स का द न न कि च क य ला ह ॥ म लु म धन भू ता दि च र्पा च न ति कि त्वा रु ग व रु ॥ दृष्टा दि च
 र्पा त्वा ग क रु ला ह व नां ॥ ना प्रो व ड म धि ॥ नि खिल व ड गु ल व रु ला स क ल प नि स मा र्ग स र्व ध

कने ॥ पु कि दि नं प्रि सं धं धन यी य कि गु ॥ अ र्था र्थां ध म ल य र्व प र कं रा च यी य कि चि ता न ॥ य
 म य था म यं य था गं य था स म यं य था क लं य था व द र्पी य नि रं ॥ स प का म पि य कि प्र ण कं स्व यं वा
 य कि ॥ क र्था दि नि धु या धि म रि ॥ ह रं क लं कं न न का न र्थां ॥ उ का हा व रु ला य न दृष्ट ॥ सर्वं क वा क
 स र्व वि रु न वि हा नी सर्व ग क थ ता म कि सं धा दि सर्व धर्म क ल्प वा अ स क या प्र थ नां ॥ रु व प न म या
 रु रु ध र्म पा रु ला इ कि रु ला ॥ प्र स पु अ न क न या ॥ य द्वा प र्वा अ मा स्य लि कि ॥ स म स्या ग का ॥ धि रु स
 मी ल यि ता स मा ग म्य स म्भ रा स र्व धर्म मू र्ता नि गु न्ना दि वि ना क म या न्प द र्भ यि यी कि आ स हा वं स्त
 द्वा य न गु र्थे क प रु प रु वा न गु री य कि स र्व धर्म हि सं वा ध वि व स्त पु कि व ध न ॥ मार्ग ध्या न नि धा ध
 ध म रा या न ध र्म पु र्वा क वि ना नं व द्वा व द्वा वि ना न ध र्म ल्प रा म य न व स्त न य र्म यि य कि ॥ इ री ना नां म
 वा व रु स ला द या ॥ ना ल ध क न ध या का ल्प नि गु का ना ना ना नि र्म ध द्वा य ना रु स म्भ उ व न स्य मा म वा

नमोऽप्यध्यात्मनः ॥ नित्यं च तस्मात्समन्वितं निरुद्धं नियतां सर्वमनुमत्ता नो मरि समयकृतम्
यामहविद्यानाम् ॥ १८ ॥ अथाप्युक्तं विद्युविनायकानामनयः ॥ पनक्तुः शनिवर्तिकां लब्धव्याम्
पापं धृक्कायवाञ्छितं यानां कमाङ्गावन्धगुप्तिकविषयि ॥ यन्नुक्तं विष्णुप्रहृष्टयस्तदास
कस्यानकमभ्यस्यवाश्च विषयाग्रामः ॥ वरकूलं नगन ॥ नगनवहिः सन्निवृत्तां नयदः ॥ नापुं
वदुनधुष्यथ ॥ धृक्कायकं विषयं नगनस्याकनायनं विमशापस्थं ॥ लाङ्कायस्थं नां नमः ॥ अगत
नरि ॥ समग्रमस्तु ॥ धृक्कायदिनविष्णुकायस्य मरुत्सदासर्वथा सर्वं मृदादिहृङ्गाहृङ्गादिह
मनस्यामस्यामनस्या ॥ अथाप्युक्तं विद्युविनायकानामनयः ॥ पनक्तुः शनिवर्तिकां लब्धव्याम्
हिः कावरीः ॥ १९ ॥ अथाप्युक्तं विद्युविनायकानामनयः ॥ पनक्तुः शनिवर्तिकां लब्धव्याम्
पुञ्जस्य किं जायते वलमायुर्द्विंशतिपदे हनिष्यति चतुर्थे ॥ १९ ॥ पञ्चमस्याहपूजनपनं

आकृष्टं ॥ १० ॥ विष्णुकायस्य मरुत्सदासर्वथा सर्वं मृदादिहृङ्गाहृङ्गादिह
नरस्य कंदपिकथमपि इति ॥ अथाप्युक्तं विद्युविनायकानामनयः ॥ पनक्तुः शनिवर्तिकां लब्धव्याम्
नावदुःखं वदुःखं धृक्कायस्य मरुत्सदासर्वथा सर्वं मृदादिहृङ्गाहृङ्गादिह
फमासाधवर्षा निवयथा ॥ कुर्ममिति ॥ नरकापस्य मरुत्सदासर्वथा सर्वं मृदादिहृङ्गाहृङ्गादिह
जीवाद्यानं मिदं ॥ वरकूलं नगन ॥ नगनवहिः सन्निवृत्तां नयदः ॥ नापुं
खवासहृष्टीयदर्शनं ॥ अथाप्युक्तं विद्युविनायकानामनयः ॥ पनक्तुः शनिवर्तिकां लब्धव्याम्
वाना ॥ अथाप्युक्तं विद्युविनायकानामनयः ॥ पनक्तुः शनिवर्तिकां लब्धव्याम्
स्वनवदुःखं वदुःखं धृक्कायस्य मरुत्सदासर्वथा सर्वं मृदादिहृङ्गाहृङ्गादिह
मरुत्सदासर्वथा सर्वं मृदादिहृङ्गाहृङ्गादिह

मरि समय कृतमलानीवजध्वारादीनिर्गयिष्यन्ति॥नि॥भवादेवसाम्बन्धिनःश्रममलादः
 र्हितकालाव्यवस्थापुस्तुभिर्नामहायनाकिताधसनादिदिव॥एतद्विद्वत्कानवकमनस्योनिषय
 हृदयसुसदासर्वाकानमहाभाउवदुर्वायथनिदाधस्यगणकथसमाहितस्यासमाहितस्यनु
 नपद॥नापुंविषय४कठकाभाऊधानीदानां॥धार्मिककलेनधार्मिकगणपतलीनगनदानः
 नांरुमधगकस्य४यावदुन्यगृहंगिन४कंदनादनीनदीवनस्यग्रहनेंरपागिरस्यउद्दिष्टस्या
 र्जुनाहस्कादिकनिष्यन्ति॥नादिनिर्वंस्वस्तुवधानियिष्यन्ति॥वायामहानगमशुशोनागमकुलानी
 मादुनभूतिनूमान॥धहनसदनीडाकावुझादीनांभक्तिदेवतालयथावृकानीवेःपुवीर्जिडिवाजा
 नर्थाभिलिना४पनिपद॥धुनज्जवलासामबलानकायावनिष्यन्ति॥पनंभक्तस्यकायउडावलेन
 स्याहपूननयनंवदयासवजधनय४मांनामसंगीतिनामचदमधीपुत्रहमखधुसमायनमि

नि॥भतेनिर्मानकायनाविनादिनयवभाउ॥कृति॥वाधिवडादीधुनाननिर्माधगकानुडकुकि
 स्यस्यकधृष्टदोमन्॥यदनवदुभापिहीनतिशयवधिनदि४सम्यक्कानयवस्यदिविकलाता॥
 कृता॥नानस्यासंस्तिस्त्वेषर्हिर्कृत्वादि॥कल्याणभक्तुनागमस्योर्हिर्कृत्वावनिजार्गमध॥दिवसात्स
 त्कृत्वालेपिन॥ननामहयादिनवकुयपकनधवकस्यादीनिर्गय४क्र॥आकाशाद्यानंसनिरा
 यपर्थत्वाहसकादि४उरुयकलविशुधधसमनात्यसादजनकसंस्थानवर्धवान्॥पियामनाग्रहीस्
 यंअसंवाकंमस्य४षक्रुतिषमधयउयथापयय॥कृताहिसमनाहविष्यदि४महाहागमहापनि
 यादानादिषट्पानमितागुधंय४मेप्रादिचकुवेंभविहानिस्मृतिंयजनपट४उपायवलपुसिधी
 ४पसमधवि४पद४पुहितानसंपन्नदऊसाहीमूललगकोभीयविनहाहा॥संदुहा॥यकुत्साह
 समकधपर्वमधतानिचभिलचकु४षष्टिकलावडहिसनंयउउनिभास्यनिनामुदिवार्षपदि

6506

DH 366

धर्मरत्न वज्राचार्य भुवनेश्वरी महाविहार

ॐ